❁ बाल अर्कवंशी मेरठ ❁

फूलचन्द सिंह	शिवराम सिंह
प्रेमचन्द सिंह	कन्हइ सिंह
मनोहर सिंह	रामसरूप सिंह
नत्थू सिंह	जमनाप्रशाद
प्रशादी सिंह	धरमसिंह
परमू सिंह	चंदी प्रशाद
हरदयाल सिंह	गया प्रशाद
जगनू सिंह	रघुबर दयाल
मैंचालाल	लालता प्रशाद
बेचासिंह	बिशनू सिंह

पहले हम 'ईश्वरआराधना, फुटकर नोट, भूगोल
आदि २ विषयों पर संक्षेप में नोट लिखेंगे। इन धार्मिक बा
ध्यान भी भाइयों को होना चाहिये जिससे धर्म में अधिक
हो तद्पश्चात् वंशावली लिखेंगे। दो प्रेसों में छपने के
शीघ्रता में छापेखाने की भूल से कई अशुद्धियाँ रह गई हैं
है कि भाई लोग उन्हें सुधार कर पढ़ लेंगे।

प्रार्थी

से० मूलचन्दसिह अर्क

❀ सहायक सभा ❀

० मूलचन्दसिंह अर्क	सभापति	श्री मातादीन सिंह	मेम्बर
नेसिंह जी प्रधान	मंत्री	,, किशन सिंह	,,
(१) सहा० प्र०	मंत्री	,, किशोरीसिंह	,,
(२)	मंत्री	,, नन्हे सिंह	,,
संह जी	मेम्बर	,, मुल्ला सिंह	,,
सिंह	,,	,, सकटे सिंह	,,
	,,	,, जोखन सिंह	,,
	,,	,, सीताराम सिंह	,,
	,,	,, घूरे सिंह	,,
सिंह	,,	,, भूप सिंह	,,
ा सिंह	,,	,, गनेश सिंह	,,
न्ना सिंह	,,	,, धन्ना सिंह	,,
ापाल सिंह	,,	,, छेदी सिंह	,,

❀ श्री गणेशायनमः ❀

❀ ईश्वर आराधना और उस की प्राप्ति ❀

ईश्वर एक है, वह सर्वव्यापी और जगत का पालन कर्ता है। हर एक प्राणी को उस की आराधना करनी चाहिये। हम जो कुछ देख रहे हैं वह सब ईश्वर के ही स्वरुप हैं केवल नाम पृथक पृथक हैं जैसे स्वर्ण एक ही वस्तु है परन्तु आभूषणों के नाम अलग अलग हैं। देव, मनुष्य, पशु, पक्षी, वृक्ष और सर्प अविन सभी अनन्त परमात्मा के रूप हैं यह जान के सब स्थावर जङ्गम जगत को अपने समान देखना उचित है। क्योंकि यह ईश्वर ही विश्वरूपधारी है। ऐसा जानने वाले पर परमात्मा प्रसन्न होते हैं। समभाव ही भगवान की आराधना है। उन के प्रसन्न होने से जगत में क्या दुर्लभ है? धर्म, काम, अर्थ तो तुच्छ हैं, मोक्ष के लिये भी प्रार्थना न करना पड़ेगी। इस लिये अनन्त ब्रह्म तरु का आश्रय लेने से मनुष्य निसन्देह महत् फल पाता है।

हर एक मनुष्य विचार करने पर यह समझ सकता है कि मनुष्य योनि में आकर हमें उत्तम लाभ उठाना

चाहिये। खाना, पीना, सोना, मैथुन करना तो कीड़े पत्तंगे व नीच से नीच योनि में भी रहकर हम प्राप्त कर सकते हैं, अगर मनुष्य योनि पाकर हम इन्हीं धन्दों में लगे रहे तो फिर मनुष्य जन्म पाकर हमने कुछ भी नहीं किया। मनुष्य जन्म को पाकर मुख्य उद्देश तो ऐसी वस्तु का पाना है जिस के समान दूसरी वस्तु नहीं है, और वह वस्तु है "श्री परमात्मा की प्राप्ति।"

भगवान की प्राप्ति हो जाने के बाद वह भक्त कृत-कृत्य हो जाता है। उस के सम्पूर्ण अवगुण नष्ट होजाते हैं। और वह पूर्ण महात्मा बन जाता है। फिर उसका पुनर्जन्म नहीं होता। श्री गीता जी में कहा है:—

मामुपेत्य पुर्नजन्म दुःखालयम शाश्वतम्।
नाप्नुवन्ति महात्मानः सं सिद्धिं परमां गताः॥ ८। १५

'परमसिद्धि को प्राप्त हुए महात्माजन मुझ को प्राप्त हो कर दुःख के स्थानरूप क्षण भंगुर पुनर्जन्म को नहीं प्राप्त होते'। इस लिये मनुष्य मात्र को ईश्वर आराधना और भगवत प्राप्ती का सदैव उपाय करना चाहिये॥

❀ फुटकर नोट ❀

वेद चार हैं—ऋगवेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद। पुराण अठारह हैं[1]—पहिला ब्रह्मपुराण, दूसरा पद्मपुराण, तीसरा विष्णुपुराण, चौथा शिवपुराण, पांचवां भागवत पुराण, छटा नारदीय पुराण, सातवां मार्कण्डेय पुराण, आठवां अग्नि पुराण, नौवां भविष्य पुराण, दसवां ब्रह्मवैवर्त पुराण, ग्यारवां लिंगपुराण, बारवाँ वराह पुराण, तेरवां स्कन्दपुराण, चौदवां वामन पुराण, पन्द्रवां कूर्म्म पुराण, सोलवां मत्सयपुराण, सतरवां गरुड़पुराण अठारवां ब्राह्माण्ड पुराण। स्मृति भी अठारह हैं[2]—मनु स्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, मिताक्षरास्मृति, हारीत स्मृति, पाराशर स्मृति, भृगु स्मृति, सामावत स्मृति, कात्यायन स्मृति, वशिष्ट स्मृति, भरद्वाज स्मृति, कौशिक स्मृति, बार्हस्पत्य स्मृति, गोतमस्मृति, कश्यपस्मृति, आसुरस्मृति, जमदग्निस्मृति, असस्मृति, यमस्मृति,। शास्त्र छै हैं—मीमांसा, पातञ्जलि, सांख्य, न्याय, वैशेषिक, वेदान्त। युग चार हैं—सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग। सतयुग प्रमाण १७२८००० वर्ष, त्रेताप्रमाण १२९६००० वर्ष, द्वापर प्रमाण ८६४००० वर्ष और कलियुग प्रमाण

१ विष्णु पुराण से। २ शिव पुराण से।

४३२००० वर्ष। तीन युग व्यतीत होने के पश्चात् अब कलियुग भोग रहे हैं। जिन में ५०३७ वर्ष बीत चुके और ४२६९६३ वर्ष बाकी हैं। इस समय विक्रम सम्बत् १९९३ शाके: १८५८, सन् १९३६-३७ ई० और मुसलमानी सन् १३५४ हिजरी है। विवाह आठ प्रकार के माने गये हैं—ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गान्धर्व, राक्षस, पैशाच। आश्रम चार हैं—ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, बानप्रस्थ और सन्यास। दिशा दस हैं—पूर्व, अग्नि, दक्षिण, नैऋत्य, पश्छिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, स्वर्ग और भूमि। श्री विष्णु जी के दस अवतार—मत्सय, कूर्म, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बौद्ध, और कलङ्की। वर्ण चार हैं-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र। भूलोकों की वृद्धि के अर्थ मुख से ब्राह्मण, वाहु से क्षत्रिय, उरू से वैश्य, पाद से शुद्र इस क्रम से सृष्टिकर्ता ने उत्पन्न किये[1] ॥ ३१ ॥ इन चारों वर्णों के अलग अलग कर्म-लिखे हैं कि "ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रक्षार्थ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्रों के कर्मों को पृथक २ बनाया ॥८७॥ ब्राह्मणों के षटकर्मों को बड़े कान्ति वाले प्रजापति ने बनाया—पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना, कराना, और दान लेना, देना, यह छै हैं ॥८८॥ प्रजा का रक्षण,

१—मनु. प्र. अ. पृष्ठ ७।

दान देना, यज्ञ करना, पढ़ना और जितेन्द्रिय, यह कर्म संक्षेप से क्षत्रियों के अर्थ बनाये ॥ ८९ ॥ पशु अर्थात् गाय बैल इत्यादि इन का पोषण करना, दान देना, यज्ञ करना, पढ़ना, सौदागरी करना, महाजनी और खेती कला, यह वैश्यों के कर्म हैं ॥ ९० ॥ ब्रह्मा जी ने शुद्रों के वास्ते एक ही कर्म बनाया वह यह कि तीनों वर्णों की सेवा निंदा रहित अर्थात जिस में कोई निंदा नहीं[1] ॥ ९१ ॥" ब्राह्मण दस प्रकार के—पंञ्चगौड़, और पञ्चद्राविण। पञ्चगौड़ में—सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल, उत्कल। पञ्चद्राविण में—गुर्जर, द्राविण, महाराष्ट्र, कर्णाटक, तैलंग। क्षत्रियों के ३६ प्रसिद्ध कुल[2]—१-सूर्यबंशी, २-चंद्रबंशी, ३-गहिलोत, ४-यदु, ५-तुआर, ६-राठौर, ७-कुशवाहा, ८-प्रमार, ९-चौहान, १०-चालुक्य या सोलङ्की, ११-परिहार, १२-चबारा, १३-तक्षक, १४-जित, १५-हूण, १६-काती, १७-बल्ल, १८-झाला, १९-जैतवा या कमारी, २०-गोहिल, २१-सरवैया, २२-सिलार, २३-डाबी, २४-गौड़ २५-डोर, २६-गहरवाल, २७-बड़गूजर, २८-सैंगर, २९ सकरवाल, ३०-बैस, ३१-दहिया, ३२-जोहिया, ३३-

1. मनु. प्र. अ. पृष्ट १७।
2—H. T. & C. Vol. 1. Page 121.

मोहिल, ३४-निकुम्भ, ३५-राजपाली, ३६-दाहिमा ॥

अग्रवाल वैश्यों के साढ़े सत्तरह गोत्र[1]—१-गर्ग, २-गोयल, ३-गावाल, ४-बांसल, ५-कांसल, ६-सिंगल, ७-मंगल, ८-भद्दल, ९-तिंगल, १० ऐरण, ११-टेरण, १२-हिंगल, १३-तित्तिल, १४-मित्तल, १५-तुंदल, १६-तायल, १७-गोभिल, १७½ -गवन ॥

भूगोल खगोल

लोक तीन हैं—स्वर्गलोक, पाताललोक और मृत्युलोक। इनके चौदह हिस्से हैं जो चौदह लोकों के नाम से प्रसिद्ध हैं जिन में सात नीचे हैं और सात ऊपर हैं। नीचे के लोकों के नाम—अतल, वितल, सुतल, महातल तलातल, रसातल और पाताल। ये नीचे के सातों लोक दस दस हज़ार योजन हैं जो अन्डे के समान गोल हैं। इन सातों लोकों के नीचे एक और लोक है जिस में शेष जी विराजमान हैं और पृथ्वी को अपने शीश पर धरे हैं। ऊपर के लोकों के नाम—भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जन लोक, तपलोक और सत्यलोक। ये सातों लोक एक के ऊपर एक हैं।

1—जा. अ. प्र. भा. पृष्ठ १७५ (सं. संस्करण)

क्षिति लोक (पृथ्वी या भूलोक) जिसमें मनुष्य रहते हैं यह लोक पचास कोटि योजन विस्तार में है। इस में सात द्वीप हैं—जम्बू द्वीप, प्लक्ष द्वीप, शाल्मलिद्वीप, कुश द्वीप, क्रौंच द्वीप, शाक द्वीप और पुष्कर द्वीप। इन सातों द्वीपों को सात ही समुद्रों ने एक एक करके घेर रक्खा है। समुद्रों के नाम क्रम से यह हैं—लवण समुद्र, ऊखसमुद्र, सुरा समुद्र, घृतसमुद्र, दही समुद्र, दूध समुद्र, जलसमुद्र। जम्बू द्वीप को लवण समुद्र ने घेरा है।

जम्बू द्वीप में नव खंड हैं और इन नव खंडों में एक एक करके क्रम से नव ही पर्वत हैं जो एक एक पर्वत एक एक खंड में बसा हुआ है। नव खंडों के नाम—भद्राश्व खंड, हरिवर्ष खंड, किम्पुरुष खंड, भारत खंड, केतुमाल खंड, रमयकखंड, हिरण्यमयखंड, कुरुखंड और नवें खंड का नाम इलावर्त खंड है जो आठों खंडों के बीच में है। पर्वतों के नाम—गन्धमादन, निषध, हेमकूट, हिमालय, माल्यवान, नीलगिरी, श्वेत, शृङ्गवान और नवें पर्वत का नाम सुमेरु पर्वत है जो सब पर्वतों का राजा है और यह पर्वत इलावर्तखंड की नाभि में स्थिति है। इन नव खंडों में भारत खंड शुभ कार्य करने योग्य है क्योंकि इस खंड में शुभ कार्य करने से उत्तम फल मिलता है।

जम्बू द्वीप के आधीन और आठ उपद्वीप हैं। इन के नाम स्वर्णप्रस्थ, चन्द्र, शुक्रपरिवर्तन, रमणक, मन्दिरहरण, जन्य, सिंहल, और लम्ब। जम्बू द्वीप को चारों ओर से क्षार (खारी) समुद्र घेरे हुए है। इस के बाद प्लक्षद्वीप है, यह भी सात खंडों में बटा हुआ है। शाल्मलि द्वीप भी सात खंडों में, कुश द्वीप सात खंडों में, क्रौंचद्वीप सात खंडों में, शाकद्वीप सात खंडों में और पुष्करद्वीप सिर्फ दो खंडों में बंटे हुए हैं। ये सारा वृतान्त सिर्फ एक लोक का अति संक्षेप में लिखा गया है॥

क्षितिलोक के ऊपर भुवर्लोक है। इस में भी बहुत से उपलोक हैं—पिशाचपुर, गुह्यक लोक, गन्धर्व लोक, विद्याधरलोक, सिद्धलोक, अप्सरालोक, राहूलोक, ये सब एक के उपर एक हैं।

भुवर्लोक के ऊपर स्वर्लोक है इस में भी उपलोक हैं—सूर्यलोक (एक लाख योजन), चन्द्रलोक (दो लाख योजन), उडुगण लोक (तीन लाख योजन), बुध लोक (पांच लाख योजन), शुक्रलोक (सात लाख योजन), भौम लोक (नौ लाख योजन), बृहस्पति लोक (ग्यारह लाख योजन), शनैश्चर लोक (तेरह लाख योजन), ऋषिलोक (चौदह लाख योजन)

धुवलोक (पन्द्रह लाख योजन) पृथ्वी से दूर हैं। ये सब लोक भी एक के ऊपर एक हैं।

महर्लोक—यह पृथ्वी से एक करोड़ योजन ऊंचा है। और यहां अट्ठाइस करोड़ देवता रहते हैं।

जनलोक—पृथ्वी से दो करोड़ योजन ऊंचा है।

तपलोक—पृथ्वी से चार करोड़ योजन ऊंचा है।

सत्यलोक—पृथ्वी से आठ करोड़ योजन ऊंचा है।

❀ मन्वन्तर ❀

ब्रह्मा के एक दिन में चौदह मनु राज करते हैं। मनुओं के नाम—१-स्वायंभुव, २-स्वारोचिष, ३-उत्तम, ४-तामस, ५-रैवत, ६-चाक्षुप, ७-वैवस्वत, ८-सावर्णि, ९-दक्षसावर्णि, १०-ब्रह्मसावर्णि, ११-धर्मसावर्णि, १२-रुद्रसावर्णि, १३-देवसावर्णि, इन्द्रसावर्णि। जितने समय में एक मनु प्रजापालन करता है। उतने समय को एक मन्वन्तर कहते हैं। हर एक मन्वन्तर में इकहत्तर चौकड़ी युग अर्थात् सतयुग, त्रेता, द्वापर, और कलियुग (इकहत्तर बार) बीत जाते हैं।

इस समय छै मनु बीत चुके हैं अब सातवें वैवस्वत मनु भोग रहे हैं और सात मनु अभी और आगे होने वाले हैं। वैवस्बत मनू सूर्य के पुत्र हैं। इन्होंने अयोध्या पुरी बसाई है। सम्बत् १९९३ तक इन मनू की सृष्टी को १९७२९४९०३७ वर्ष होते हैं[१]। इन के समय के अट्ठाइसवीं चौकड़ी के कलियुग अब बीत रहे हैं। और तैंतालिस चौकड़ी युग अभी और इन का समय चलेगा।

इसी प्रमाण से ब्रह्मा की एक रात्री होती है। इसी अहोरात्रि के अनुसार सौ वर्ष १००, ब्रह्मा की आयु नियत है। तत्पश्चात् महाप्रलय होता है अर्थात् सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड जगत् के कारण ईश्वर में लय को प्राप्त होता है। इस समय वैवस्वत मन्वन्तर के २८ वें कलियुग के ५०३७ वर्ष बीत चुके हैं। ब्रह्मा की आयु का पूर्वार्द्ध बीत कर उत्तरार्द्ध के प्रथम वर्ष का पहिला दिन और दूसरा प्रहर प्रारम्भ है[२]।

१—दा० रा० भा० १ फुटकर नोट।
२—पञ्चांग [रामदत्त ज्योतिर्विद्]।

❀ प्रलय ❀

श्री विष्णु पुराण के लेखानुसार प्रलय तीन प्रकार की कही जाती है—१-नैमित्तिक, २-आत्यन्तिक और ३-प्राकृतिक। ब्रह्मा के एक दिन को एक कल्प कहते हैं, इस एक कल्प में चौदह मनु हुआ करते हैं। इसके बाद अर्थात् कल्प के अन्त में ब्राह्म नाम नैमित्तिक प्रलय हुआ करती है। इस प्रलय के बाद फिर सृष्टि रचना होती है।

इसी प्रकार जब अखिल विश्व की आत्मा वह महा विष्णु जाग्रत होते हैं, तब जगत की सृष्टि आरम्भ होती है और जब वह महा पुरुष योग-शय्या में सोते हैं, उस समय सृष्टि का उपसंहार हुआ करता है। जितने समय को ब्रह्मा का एक दिन कहा गया है, सम्पूर्ण जगत जल में डूबने पर उतने ही समय तक उनकी एक रात्रि होती है। रात्रि बीतने पर ब्रह्मा जाग कर फिर सृष्टि आरम्भ करते हैं।

नैमित्तिक प्रलय इस प्रकार होती है—ब्रह्मा के एक दिन अर्थात् एक कल्प के बाद "पृथ्वीतल छिन्न होजाने पर सौ वर्ष तक अत्यन्त कठोर अनावृष्टि हुआ करती है। उसमें समस्त पार्थिव जीवों का नाश होजाता

है। तिसके अनन्तर वह अव्यक्तात्मा विष्णु भगवान रुद्र रूप धर के प्रलय के लिये अपने में प्रजाओं को लीन करने की चेष्टा करते हैं। फिर वह रुद्ररूपी विष्णु भगवान सूर्य की सप्त प्रकार की किरणों में निवास करके सम्पूर्ण जल को पान किया करते हैं। समस्त प्राणियों और पृथ्वी के जल को पीकर वह महापुरुष पृथ्वीतल को शोषण करते हुए नदी, समुद्र, पर्वत, झरना अथवा पाताल में भी जो जल है, उसे भी शोषण करेंगे। फिर जल पीने से क्रम से परिपुष्ट होकर वे सूर्य की सातों किरणें सात सूर्य रूप से प्रकाशित होंगी। ऊर्द्ध में वे सातों प्रदीप्त सूर्य्य, नीचे स्थित सम्पूर्ण भुवनों को अशेषरूप से भस्म करेंगे। तब उन प्रदीप्त सूर्य्यों के द्वारा त्रिभुवन जल के अभाव में सूख कर भस्म हो जावेगा। उस समय तीनों लोक में स्थित सम्पूर्ण वृक्षादिकों को सूख कर जल जाने पर केवल कछुए के पीठ की तरह पृथ्वी ही दिखाई देगी। फिर सब को संहार करने के लिये विष्णु भगवान अनन्त देव के श्वास से उत्पन्न हुई कालाग्नि से पाताल भस्म होजावेगा। अनन्तर वह कालाग्नि सम्पूर्ण पाताल खंड को जलाकर उर्द्ध-गामी होके पृथ्वीतल को भस्म कर देगी। फिर वह जलती हुई दारुण अग्नि भुवर्लोकों को जलाकर स्वर्लोकों

को भी भस्म करेगी। उस प्रखर कालाग्नि के तेज से विनष्ट होकर समस्त चराचरों के सहित त्रिभुवन उस समय एक भर्जनकटाह की भांति मालूम होगा। उस समय दोनों लोकों के निवासी महात्मागण पचंड अग्नि के ताप से पीडित होकर महर्लोक का सहारा लेंगे और वहां भी अग्नि से छुटकारा-मिलने से जनलोक में जावेंगे। फिर वह रुद्र रूपी भगवान जनार्दन अपने मुख के निश्वास से बादल उत्पन्न करेंगे। फिर बिजली और वज्रध्वनियुक्त सम्वर्तक नाम मेघ समूह बड़े हाथियों की भांति आकाश मार्ग में व्याप्त होंगे।" "वे बादल समूह मूसलाधार पानी बरसा कर त्रिभुवन व्यापी उस भयंकर अग्नि को शान्त करेंगे। फिर वे बादल लगातार जल बरसा कर भूमंडल को डुबा के क्रम से भुवर्लोक और स्वर्लोक को भी डुबावेंगे। उस समय में सब लोक अन्धकार मय होंगे और स्थावर जंगम सम्पूर्ण पदार्थ नष्ट हो जावेंगे, केवल वह मेघ एक सौ वर्ष से भी अधिक समय तक लगातार जल की वर्षा करते रहेंगे।

जब सप्त ऋषियों का स्थान तक जल में डूब जावेगा तब अखिल भवन एक महा समुद्र की भांति दीखेगा। तिसके अनन्तर विष्णु भगवान के मुख से निश्वास रूप से प्रबल वायु उत्पन्न होगी और सम्पूर्ण बादलों को विनष्ट

करके एक सौ वर्ष पर्य्यन्त प्रचंड वेग से बहेगी। तब सम्पूर्ण विश्व के आदि पुरुष अनादिनिधन भूतभावन विष्णु उस वायु को निःशेष रूप से पीकर एकाकार उस समुद्र के बीच शेष शय्या पर सोवेंगे"[१]।

---

* पैग़ाम *

वीर भक्तों में लिखादो सब से पहले नाम को।
जाति सेवा करके दुनियां में दिखा दो काम को॥
जाति सेवा के लिये गर हो जरूरत जान की।
है यही लाज़िम कि अर्पण करदो अपने प्राण को॥
इस तरह करो उन्नति कि लोग सब देखा करें।
जान जाये तो मगर जाने न देना शान को॥
हर जगह प्रचार अपनी क़ौम का हो 'मूलचन्द'।
जाति वीरों को सुना दो शीघ्र इस पैग़ाम को॥

१—वि० पुरा० षष्ट अंश।

❀ श्री गणेशायनमः ❀

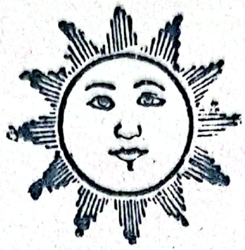

श्री अर्क वंशीय क्षात्रिय वंशावली

❀ दोहा ❀

पारब्रह्म को नाम ले, श्री गुरु शीश नवाय।
अर्क वंश वंशावली, लिखहुं गणेश मनाय॥
भूल चूक जो होय कछु, कीजे क्षमा सुजान।
दया दृष्टि मोपे राखियो, दास आपनो मान॥

अखिल जगतस्रष्टा भगवान नारायण के नाभि कमलसे ब्रह्मा उत्पन्न हुए[1]। ब्रह्मा के पुत्र मरीचि और मरीचि के कश्यप, कश्यप के पुत्र सूर्य्य और सूर्य्य के पुत्र वैवस्वत मनु हुए[2]। वैवस्वत मनु के दस पुत्र हुए—१-इक्ष्वाकु, २-भृगू, ३-गरुड़धष्ट, ४-शर्याति, ५-नरिष्यन्त, ६-नाभाग, ७-दिष्टिक, ८-रोष, ९-प्रषध्र, १०-वसुमान[3] और एक इला नाम्नी कन्या प्राप्त हुई। कन्या इला और चन्द्र पुत्र बधु के संयोग से पुरूरवा नामक पुत्र उत्पन्न

१. वि० पु० चौ० अं० । २. बा० रा० बा० । ३. वि० पु० ११खं०१७अ०

हुआ, जिस से चन्द्रवंशी राजपूतों की शाखा चली। इसी चन्द्रवंश में भगवान कृष्ण ने अवतार लिया, और अति बल पराक्रमशाली नहुष, ययाति, कार्त्तवीर्य्यार्जुन इत्यादि बड़े बड़े महाराजे हुए[१]। कंस और जरासिंध राजे भी इसी चन्द्रवंश में हुए। वैवस्वत मनु के बड़े पुत्र इक्ष्वाकु के सौ बेटे हुए। राजा इक्ष्वाकु के सौ पुत्रों में विकुक्षि, निमि और दण्ड नाम तीन पुत्र श्रेष्ठ हुये[२]। निमि के वंशज मैथिल राजागण हुए राजा जनक इसी वंश में हुये थे, इन के बीच प्राय सब राजा आत्म तत्व में पंडित हुये[३]। इक्ष्वाकु के पुत्र विकुक्षि, शशाद नाम से प्रसिद्ध हुये। "शशाद के पुत्र रिपुंजय, रिपुंजय के कौस्तुभ, कौस्तुभके हरिबाह, इन के अर्णाभ और अरर्णाभ के वशिष्ट राश्व, इन के पृथु पृथु के चन्द्र, चन्द्र के युवनाश्व, इन के शावस्त, इन के वृहदश्व, इन के कपिल और कपिल के पुत्र दृढ़ाश्व हुये। दृढ़ाश्व के पुत्र हर्यश्व, इन के निकुम्भ, निकुम्भ के सहताश्व और इन के कृशाश्व, कृशाश्व के प्रसेनजित् और इन के युवनाश्व, युवनाश्व के मान्धाता हुये, मान्धाता के मुचकुन्द हुये।" ये मुचकुन्द वही हैं जिन का ज़िक्र प्रेमसागर में आया हुआ है।

१. वि० पु० चौ० अ० छ० अ०। २. वि० पु० चौ० अ० दू० अ०।
३. वि० पु० चौ० अ० पा० अ०।

कालयावन को बध करने के लिये जब कृष्ण भगवान पहाड़ की कन्दरा में गये वहां मुचकुन्द सोये हुए थे। भगवान् ने अपना पीताम्बर उन के ऊपर डाल कर आप कन्दरा में छिप गये। कालयावन ने आते ही भगवान कृष्ण जान कर मुचकुन्द के ऊपर से पीताम्बर खैंचा जिस से मुचकुन्द जाग पड़े और इन की दृष्टि पड़ते ही कालयावन भस्म हो गया। "मुचकुन्द के पुरुकुत्स, इन के त्रयारुणि, इन के त्रशंक, त्रशंक के पुत्र हरिश्चन्द्र हुए।" हरिश्चन्द्र का यश सारे संसार में विख्यात है, इन्होंने स्वर्ण अक्षरों में यह खुदवा रक्खा था कि—

चन्द्र टरे सूरज टरे, टरे जगत व्यवहार।
पर दृढ़ व्रत हरिश्चन्द्र को, टरे न सत्य विचार॥

"हरिश्चन्द्र के पुत्र रोहित, रोहित के हरित और इन के चम्पक, चम्पक के बिजय, बिजय के भरुक, इन के वृक, वृक के बाहु, बाहु के पुत्र सगर हुए"। सगर के पिता बाहू हैहय तालजंघ आदि क्षत्रियों से पराजित होकर भार्या सहित बन को चले गये थे वहां राजरानी को गर्भ रहा और राजा बाहु भी वृद्धावस्था के समय के अनुसार मृत्यु को प्राप्त हुए, कुछ दिन बाद तेजस्वी बालक का जन्म हुआ और उस का नाम सगर रक्खा। सगरने बन में सयाने

होने पर अपनी माता से पूछा कि हम लोग इस तपोवन में क्यों रहते हैं। मेरे पिता कौन हैं तथा कहां रहते हैं। माता ने बालक के समीप सारा वृत्तान्त कह सुनाया। सुनकर सगर ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर, पिता के राज्य हरण करने वाले हैहय तालजंघ आदि को वध करने की प्रतिज्ञा की। इस के बाद उन्होंने प्रायः सब हैहय राजाओं को विनष्ट किया, फिर शक, यवन, काम्बोज, पारद और पह्लवगण सगर से पराजित होकर उन के कुल गुरु वशिष्ठ के शरणापन्न हुए। वशिष्ठ ने सगर से कहा। हे तात, इन लोगों का पीछा करने से क्या फल होगा ? मैंने तुम्हारी प्रतिज्ञा पालन के लिये इन्हें निज धर्म तथा ब्राह्मण संसर्ग परित्याग कराया है, इसलिये ये जीवन्मृत हैं, इस में क्या संदेह है ? राजा सगर ने जो आज्ञा कहके गुरू का बचन स्वीकार किया और उन लोगों के भिन्न प्रकार के वेश कर दिये। उन्होंने यवनों को मुंडित सिर, शक लोगों को अर्धमुंडित, पारद लोगों को प्रलम्बमान केशयुक्त और पह्लवगणों को श्मश्रुधारी किया। उन्होंने जब निज धर्म परित्याग किया, तब ब्राह्मणों ने भी उन्हें त्याग दिया, इस लिये वे लोग म्लेच्छत्व को प्राप्त हुए[1]। "सगर के पुत्र असमंजस,

1. राजा सगर की संक्षेप कथा वि० पु० से।

और इन के पुत्र अंशुमान हुवे, अंशुमान के पुत्र दलीप, और दलीप के पुत्र भगीरथ हुए, ये ही श्री गङ्गाजी को स्वर्ग से लाये थे और इसी से गङ्गा का नाम भागीरथी हुआ। १"

"भगीरथ के पुत्र श्रुत, श्रुत के पुत्र नाभाग, नाभाग पुत्र अंबरीष, अम्बरीष के पुत्र सिन्धुद्वीप, उस का पुत्र अयुताश्व और अयुताश्व के पुत्र ऋतुपर्णा हुए, ऋतुपर्णा के पुत्र सर्व्वकाम, उस के पुत्र सुदास, और सुदास के पुत्र का नाम सौदास मित्रसह हुआ। मित्रसह का नाम कल्माषपाद भी हुआ। इन के पुत्र अश्मक हुए, अश्मक के पुत्र का नाम मूलक हुआ। इसी समय परशराम पृथ्वी को निक्षत्रिय करने में प्रवृत्त हुए। वस्त्ररहित स्त्रियों ने मूलक को घेर कर रक्षा की, इसलिए उसे नारीकवच कहा करते हैं। मूलक के पुत्र दशरथ हुए, दशरथ के पुत्र इलविल, इन के पुत्र विश्वसह और इन के पुत्र खटवाँङ्ग दिलीप हुए। खटवांङ्ग ने मुहूर्त्त मात्र आयु जान सकने से स्वर्ग से पृथ्वी पर आकर ज्ञानरूप अर्पपण द्वारा त्रिलोकही को वासुदेव में प्रविलापित किया। खटवांङ्ग के पुत्र दीर्घबाहु, इन के पुत्र रघु, रघु के पुत्र

१. इक्ष्वाकु पुत्र शशाद से भागीरथ तक सूर्य्य वंशी राजाओं के नाम शिव पुराण से।

अज, अज के पुत्र दशरथ और दशरथ के औरस से भगवान ने पद्मनाभ राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न रूप से चार भाग में निज अंश से जन्म ग्रहण किया,१"। महाराजा श्री रामचन्द्र जी ने समुद्र का सेत बांध महाबली रावण को मारा जिसकी कथा रामायण में वर्णन की गई है। भरत ने तीन करोड़ गन्धर्वों को मारा, शत्रुघ्न ने अमित बली पराक्रमी मधुपुत्र लवण नाम राक्षसेश्वर को मार के मथुरापुरी बसाई।

"भगवान रामचन्द्र जी के पुत्र लव और कुश हुए, कुश के पुत्र अतिथि, अथिति के पुत्र निषध, निषध के पुत्र पुंडरीक ,इन के पुत्र क्षेमधन्वा, और इन के पुत्र दिवानीक हुए। दिवानीक के पुत्र अहिक, इन के पुत्र पारिजात, और पारिजात के पुत्र वलि, बलि के अस्थल और अस्थल के पुत्र बज्रनाभ हुए। बज्रनाभ के पुत्र सगुण, सगुण के कंकनाभ, इन के पुष्प और पुष्प के पुत्र ध्रवसंधि ध्रवसन्धि के सुदर्शन और सुदर्शन के पुत्र अग्निवर्ण हुए, अग्निवर्ण के पुत्र शीघ्र और शीघ्र के पुत्र मरु हुए,,। 'ये मरु योग में निवास करते हुये अब भी कलाप ग्राम को अवलम्बन करके निवास करते हैं। और 'ये ही आगामी युग में सूर्य

१. राजा श्रुत से रामचन्द्र जी तक सूर्यवंशी राजाओं का वर्णन वि० पु०से

वंशीय क्षत्रियों के प्रवर्त्तयिता होंगे,'। "मरु के पुत्र कृतसंधि, इन के पुत्र अमर्षण और इन के पुत्र सहस्वान हुए। सहस्वान के पुत्र विश्वबाह, इन के प्रसेनजित्, इन के पुत्र तक्षक और तक्षक के पुत्र बृहद्बल हुए। ये महाभारत युद्ध में अभिमन्यु द्वारा मारे गये। बृहद्बल के पुत्र बृहदारण्य और इन के पुत्र उरूक ऋषि इन के पुत्र वत्सवृद्ध और इन के पुत्र प्रतिव्योम हुए। प्रतिव्योम के पुत्र दिवाकर और दिवाकर के पुत्र सहदेव सहदेव के पुत्र वृहदश्व, इन के भानुमान् और भानुमान के पुत्र प्रतिकाश्व, इन के सुप्रतीक और सुप्रतीक के मरुदेव और मरुदेव के सुनक्षत्र, इन के पुत्र पुष्कर और पुष्कर के अन्तरिक्ष और अन्तरिक्ष के पुत्र सुतपा, सुतपा के पुत्र अमित्रजित और इन के पुत्र वृहद्राज, वृहद्राज के पत्र बरही बरही के पुत्र कृतंजय और कृतंजय के पुत्र रणञ्जय और रणञ्जय के पुत्र राजा शाक्य हुए[1]।" इन्हीं राजा शाक्य का नाम अर्कबन्धु प्रसिद्ध हुआ और इन्हीं के वंशज अर्कवंशी राजपूत कहलाये।

---

[1] रामचन्द्र जी से शाक्य तक सूर्य्य वंशीय राजाओं के नाम शि० पु० से
न्हीं राजा शाक्य का नाम शिव पुराण में शाकप्रेश वि० पु० में शाक
ी मद्भागवत में शाक्य, और भा० अ० में शक्य कहा गया है।

शाक्यवंशी औ अरख राजपूत

यह राजा शाक्य विद्वानों द्वारा शाक्य मुनी कहे जाकर संबोधन किये गये हैं[१]। भारत वर्ष में हिंसा काण्ड व धर्म की अस्तव्यस्त दशा देख कर राजा शाक्य विरागी होगये और संसार उद्धारार्थ शास्त्रार्थ व उपदेश आरम्भ कर दिया। इन्हीं शाक्य मुनी को गौतम बुद्ध भी कहते हैं[२]। शाक्य मुनी का नाम गौतम बुद्ध भी प्रसिद्ध हुवा। महात्मा बुद्ध के जीवन चरित्र आगरे में संवत् १९६५ के छपे में लिखा है कि कपिल वस्तु याने कपिल वास में सूर्य्यवन्शी क्षत्रियों की शाक्य शाषा का राज्य था[३]। एक विद्वान ने अपने ग्रन्थ में लिखा है कि "गौतम ऋषि जिनका नाम शाक्य मुनी है वे सूर्य्य वंशी श्रीरामचन्द्र जी से ४८ वीं पीढी में हुए हैं, इन्हीं को गौतम भी कहते हैं ४। हिंदी विश्व कोष में लिखा है— 'गौतम। यह इक्ष्वाकु कुलोद्भव शाक्यवंशीय बुद्ध रहे'।

राजा शाक्य बड़े तेजस्वी और दयालु थे, इनकी राजधानी कपिल वस्तु थी। यह नगर नैपाल की तराई

१. क्ष० व० प्र० भाग १ पेज ४५३। २. क्ष० व० प्र० पृ० ४६६। ३ क्ष० व० प्र० पृष्ठ ४६३। ४ नौमु० जा० नि० प्र० भा० पृष्ठ ८३९।

में ज़िला बस्ती अंग्रेज़ी राज्य से उत्तर की तरफ़ क़ायम है। अमर कोष पेज चार में लिखा है:-शाक्यनाम-"स शाक्यसिंहः सर्वार्थ सिद्धः शौद्धोदनिश्च सः। गौतमश्चार्क बन्धुश्च माया देवी सुतश्चसः" ॥१५॥ (शाक्यसिंह, सर्वार्थ सिद्ध शोद्धोदनि, गौतम अर्कबन्धू और माया देवी सुत)। ये राजा शाक्य के नाम हैं जिनके वंशज अर्क वंशी राजपूत हैं अर्थात् अरख राजपूत राजा शाक्य के वंशज, शाक्य-वंशी क्षत्रिय हैं। एक ग्रन्थकर्ता ने अपने ग्रन्थ जा० अ० प्रथम भाग प्रथम संसकरण पेज १०९ (छापा फर्रूखाबाद सन् १९१४ ई०) में अर्क वंश जाति का विवरण लिखते हुए यह लिखा है कि "ये इक्ष्वाकुवंश के अन्तर्गत शाक्य वंशिय क्षत्रिय हैं। यह अर्कवंश शब्द अर्कबन्धू का अपभ्रन्श रूप है और इसी 'अर्कबंधू' शब्द का अर्थ करते हुये Cyclopeadia of India नामक एक अंग्रेज़ी ग्रन्थ लिखता है—

'The kinsman of the sun' अर्थात् जिसका मतलब 'सूर्य से सम्बन्ध रखने वाला' या सूर्य का वंशज होता है[1]।

(प्रथम भाग समाप्त)

---

1. C. of I. pp. 157.

❀ श्री गणेशायनमः ❀

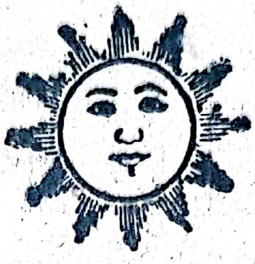

श्री अर्क वंशीय क्षत्रिय वंशावली

(दूसरा भाग)

❀ दोहा ❀

कारन तारन जाति को, लेहु मनुज अवतार।
शिव विरंच महिमा अमित, गावहिं बारम्बार॥
बहुत दिवस बीते प्रभु, भोगत दुःख महान।
अर्कजाति विनति करे, अब सुध लीजे भगवान॥

क्ष० वं० प्र० के अनुसार आज विक्रम सम्वत् १९९३ से २५५८ वर्ष पूर्व की राजनैतिक स्थिती का पता लगाने से पता चलता है कि उस समय महात्मा बुद्ध का काल था उस समय यह भारतवर्ष १६ भागों में। बटा हुआ था, यथा—

१ अंग राज्य	९ कुरू राज्य
२ मगध राज्य	१० पाञ्चालराज्य(शाक्यराज्य)
३ काशी राज्य	११ मत्स्य राज्य
४ कौशल राज्य	१२ शूरसैन राज्य
५ वज्जियों का राज्य	१३ अश्मक राज्य
६ मल्ल राज्य	१४ अवंती राज्य
७ चेदि राज्य	१५ गांधार राज्य
८ वत्स राज्य	१६ काम्बोज राज्य[१]

विद्वानों ने शाक्यवंशियों के राज्य को पाञ्चाल राज्य नाम से भी लिखा है।

शाक्यों की जन संख्या १० लाख थी। इन का देश नैपाल की तराई में पूर्व से पश्चिम को लगभग ५० मील और उत्तर से दक्षिण को ३० या ४० मील तक फैला हुआ था। इन की राजधानी कपिलवस्तु थी[२]। इसी कपिलवस्तु नाम नगरी में अर्कों के आदि पुरुष ने जन्म लिया था। पूर्व समय (त्रेतायुग) में जब महाराजा श्री रामचन्द्र जी कौशल देश (अयोध्या नगरी) में राज करते थे, यह देश राज्य के उत्तर भाग में स्थित था और 'उत्तर कौशल' कहलाता था।

---

[१] पृष्ठ ४७२। [२] क्ष० व० प्र० पृ० ४६७।

यही 'उत्तर-कौशल' देश इस अर्क वंशी शाषा का आदि स्थान है। इसी देश के 'हस-इच' नामक मुख्य नगर में इन का अधिक काल तक अधिपत्य रहा। दसवीं और ग्यारहवीं शप्ताब्दी में यह लोग बड़े शक्ति-शाली हुये। इसी समय इन लोगों ने बड़े २ नगर विजय किये तथा येही उस समय के राज्याधिकारी थे। इसही समय इन लोगों ने पहाड़ी इलाके तक सम्पूर्ण अवध और इन्द्रप्रस्थ तक सारे नगरों को विजय किया। इलाका अवध में इन लोगों का देश 'लोह गांजर' नाम से विख्यात था, जिस के विस्तार का वर्णन करते हुये एक अंग्रेज विद्वान ने इस प्रकार लिखा है—

North from Bijnaur through Sarsanwan, already mentioned, lies the plain of Ganjaria which was then known as the loh ganjar plain, or the plain of iron ; so called from the warlike demeanour of the natives, and it seems to have given the name of Ganjaria to the whole of Oudh.

(O. G. II pp. 354.)

'जैसा कि हम पहिले ज़िक्र कर आये हैं बिजनौर से उत्तर की ओर सरसांवां में गांजरिया का मैदान है जो कि उस समय लोह गांजर का मैदान अर्थात् लोहे

का मैदान कहलाता था। इस का कारण यह है कि वहाँ के निवासी युद्ध कुशल थे और ऐसा प्रतीत होता है कि समस्त अवध इसी के कारण गांजरिया कहलाने लगा।' पुन—

The author of the Chronicles of Oonao (P. 24) speaks of the 'Ganjar' as stricktly applicable only to the Khairbad Tarai, but extending to Sandila and Bangarmau.

(G. P. O. I pp. 578)

'उन्नाव क्रानीकल के सम्पादक ने (पृष्ठ २४) पर उल्लेख किया है कि 'गांजर' केवल खैराबाद तराई के लिये, जो कि संडीला और बाँगरमऊ तक फैला हुआ है प्रयोग किया गया है।'

बारहवीं शताब्दी में इन लोगों का आल्हा-ऊदल आदि बनाफरों से युद्ध हुआ जिस का कारण भी इन की वीरता और दिलेरी था क्योंकि ये लोग उस समय भी ऐसे बलवान और पराक्रमी थे कि कन्नौज के राज्य को उस के अनेक उद्योग करने पर भी न तो किसी प्रकार का कर ही देते थे और न उस की बात ही मानते थे। इसी लिये—

The Kanauj dynasty before its fall made great efforts to wrest the country from them.

(O. G. II pp. 354)

'कन्नौज के राज्यवंश ने अपने पतन होने से पहले देश को इन से छीन लेने की बड़ी कोशिश की' और यही कारण है कि जब गांजर वालों ने जैचंद को किसी प्रकार का कर नहीं दिया तब उसने आल्हा और ऊदल को भेज कर इन लोगों से संग्राम कराया परन्तु यह लोग भी सिर्फ देवा नगर तक ही जा सके और आगे न बढ़ सके लिखा है कि—

Alha and Udal advanced to Sarsanwan near Amethi and afterwards to Dewa, but seem to have got no further.

(O. G. I pp. 578)

'आल्हा और ऊदल अमेठी के नज़दीक सरसांवां तक गये और इस के बाद देवा तक, परन्तु आगे न जा सके।' इसी प्रकार यह लोग दृढ़ता से राज्य करते रहे। चौदहवीं शताब्दी में इन का यवनों से अन्तिम युद्ध हुआ। इस के बाद इस वंश में कोई शक्तिशाली राजा न हुआ।

❀ प्राचीन इतिहास की खोज ❀

सज्जनो ! वर्तमान ग्रन्थों से ज्ञात होता है कि पूर्व समय इस जाति में बड़े धर्मात्मा, बीर और दानी राजे महाराजे हो चुके हैं, जिनमें बहुतों के स्मारक चिन्ह तो अभी तक विराजमान हैं और बहुतों का इतिहास बिलकुल लुप्त है जो बड़ी खोज करने पर भी नहीं मिलता। ऐसा मालूम होता है कि मुसलमानी अत्याचार के समय, जब हिंदुओं के लाखों ग्रन्थ बरबाद किये जा रहे थे, इन के भी पुराने इतिहास जला कर नष्ट कर दिये गये। लिखा है कि—

"The temple of Udantapuri Vihar which is said to have been loftier than either of the two (Budha Gaya and Nalanda) contained a vast collection of Budhism and Brahmanical works, which after the manner of the great Alexandrian Library was burnt under the orders of Mahommed Ben Sam General of Bakhtiyar Khilji in A. D. 1202.

(The Hindu Review March 1906 page 187)

भा०—उदन्तापुरी बिहार का मंदिर जो बुद्ध गया तथा नलन्दा के मन्दिरों से बहुत ऊंचा व विशाल था

उस में असंख्य ग्रन्थ हिन्दू तथा बौद्ध धर्म के एकत्रित थे वह महान पुस्तकालय जिस तरह अलेकज़ेंड्रिया की प्रसिद्ध लाइब्रेरी जलाई जाकर नष्ट की गयी थी उसी तरह यह पुस्तकालय भी सन् १२०२ ई० में बख्तियार खिल्जी के जनरल मुहम्मद बेनसियाम ने जला कर नष्ट भ्रष्ट कर दी। पाठक! एक दूसरे इतिहास वेत्ता का कथन है कि इस लाइब्रेरी की आग एक महीने तक जलती रही थी इस से अनुमान कर लीजिये कि वहां कितने ग्रन्थ होंगे?

During the reign of the son of King Mahipal there were 1000 monks of the earlier school of Budhism called Hinayana etc., about 5000 monks of the Mahayana school at Udantapuri. The Pal kings had established a monastic University at Udantapuri, with a splendid Library of Brahmanical and Budhistic works, which was destroyed at the Sack of the Monastery and the massacre of its monks by the Mohamedans in A. D. 1202.

(The H. Review March 1906 page 190)

भा०—महाराज महिपाल के पुत्र के राज्यकाल में उदन्तापुरी में बौद्धों की प्राचीन हीनायन सम्प्रदाय के १००० एक हज़ार साधू तथा नवीन महायान सम्प्रदाय के ५००० पांच हज़ार साधू वहाँ निवास करते थे उन

विद्वान महात्मा साधुओं के अर्थ वहाँ पालवंशी राजाओं ने एक विश्व विद्यालय स्थपित किया था जिस में साधुओं के लाभार्थ एक महान् पुस्तकालय था परन्तु जनरल मुहम्मद बेनसियाय ने सन् १२०२ ई० में उसे जलाकर नष्ट करवा दिया और साधुओं को कत्ल करा डाला।

इस ही तरह 'तबकति नासरी' नामक मुसलमानी ग्रन्थ में लिखा है कि कुतबुद्दीन एबक बादशाह के जमाने में जब शहर बिहार फतह हुआ तो एक लाख के क़रीब तो सिर्फ ब्राह्मण ही क़त्ल किये गये थे और हिंदुओं का एक कदीमी कुतुबखाना जिस में बहुत पुरानी २ किताबें मौजूद थीं जला दिया गया।" (जा० अ० पेज ८ व ९)

इस ही प्रकार लाखों धार्मिक ग्रन्थ रत्न जला कर राख कर दिये गये। ऐसे समय जब हमारे ग्रन्थों की यह दशा थी तो प्राचीन संस्कृत इतिहास कहाँ से आवें जो जाति के अगुवाओं का पूरा पूरा हवाला दे सकें। परन्तु यह भारतवर्ष के सौभाग्य की बात है कि जब वर्तमान् अंग्रेज़ी सरकार ने भारत में पदार्पण किया और भारत का शासन स्वयं अपने हाथ में लिया, जातियों का निरीक्षण किया और क़ायदे कानून बनाये तो भारत में पुनः सुख, शान्ति स्थापित हुई। अब प्राचीन ग्रन्थों की

खोज भी होने लगी तथा अनेक प्रकार के ग्रन्थ दिन दूने लिखे जाने लगे जिनसे भारत वासियों को बड़ा लाभ हुआ और हमें भी अपने पूर्वजों का बहुत कुछ इतिहास प्राप्त हुआ जो निम्न लिखित है—

❀ राजा तिलोक चंद ❀

आज से एक हज़ार अट्ठारह वर्ष पहिले अर्थात् सन् ९१८ ई० के लगभग इस जाति में तिलोक चंद नामी एक राजा बड़ा शक्ति शाली हुआ, जिसने उत्तर-कौशल देश के बहराइच नगर को अपनी राजधानी बनाया और एक विशाल सैना सजा कर देहली पर चढ़ाई कर दी। इस समय विक्रमपाल नामी एक राजा देहली में राज्य करता था। राजा तिलोक चंद की चढ़ाई की खबर पाकर राजा विक्रम पाल सैना लेकर सामने आया। दोनों सैनाओं में घमासान युद्ध हुआ अन्त में राजा विक्रमपाल युद्ध में हार गया और विजई राजा तिलोक चंद ने सिंहासन अपने आधीन किया। इन्हीं का हवाला एक अंग्रेज़ी ग्रन्थ इस प्रकार देता है—

This chief fixed upon Bahraich as the seat of his empire, and led a powerful army against Raja Bikrampal of Delhi, whom he defeated and dispossessed of his kingdom. (O. G. pp. 354)

'इस राजा ने बहराइच को अपनी राजधानी बनाया और एक ताक़तवर सैना लेकर देहली के राजा विक्रम पाल पर चढ़ाई कर दी, जिसको इसने परास्त किया और उसकी बादशाहत छीन ली।'

देहली आधीन करने के पश्चात् इस वीर राजा ने अपनी विजय को और आगे बढ़ाया और दूसरे नगरों को जीतना आरम्भ किया। यथा—

He held all the country upto Delhi, and all Oudh upto mountains.

(G. P. O. pp. 354)

'उसने देहली तक सारे मुल्क को और पहाड़ों तक सम्पूर्ण अवध को अपने आधीन किया'।

इसी प्रकार राजा तिलोक चंद ने अनेक राजाओं को विजय किया, तथा दूर २ तक यश फैलाया, इन्द्रप्रस्थ ऐसे मुख्य नगर में जो सम्पूर्ण भारत की राजधानी Capital समझा जाता है, अपनी जाति का सिक्का जमाया और बहुत दिन तक राज्य-सुख भोगने के बाद स आसार संसार से सदां के लिये मुख मोड़ लिया।

देहली के सिंहासन पर अर्कवंशी महाराजे

राजा तिलोक चंद ने राजा विक्रम पाल को विजय करने के बाद इन्द्रप्रस्थ (देहली) का राज्य चौवन साल, दो महीने, दस दिन तक किया। इनके स्वर्गवास होने के बाद इनकी नौ पीढ़ियों तक देहली अर्कों के आधीन रही। लिखा है—

His dynasty lasted for nine generations.

(G. P. O. pp. 354)

'इनकी नौ पीढ़ियों तक राज्य कायम रहा'। अर्थात् राजा तिलोकचंद के वंश में नौ शक्तिशाली राजा हुए। यथा—

इस वंश का "दूसरा राजा विक्रम चंद नामी देहली के सिंहासन पर बैठा, जिसने बारह साल, सात महीने, बारह दिन तक राज्य किया। इसके बाद तीसरा राजा अमीन चंद (जिनका दूसरा नाम मानक चंद भी था) देहली के तख्त पर बैठा जिसने दस साल, पांच दिन तक राज्य किया। चौथा राजा रामचंद हुआ, जिसने तेरह साल, ग्यारा महीने, आठ दिन तक राज्य किया। पांचवां राजा हरी चन्द हुआ जिसने देहली के तख्त पर चौदह साल, नौ महीने, चौबीस दिन तक

राज्य भोगा। छटा राजा कल्यान चंद हुआ जिसने दस साल, पांच महीने, चार दिन तक राज्य किया। सातवां राजा भीमचंद नामी हुआ जिसने सोलह साल, दो महीने, नौ दिन तक राज्य किया। अर्कवंश कुल में आठवाँ लोकचन्द नामी श्रेष्ठ राजा हुआ जिसने देहली के सिंहासन पर छब्बीस साल, तीन महीने, बाइस दिन तक राज्य किया।"[1] इसके बाद इस वंश का अन्तिम राजा गोविन्द चन्द नामी देहली के सिंहासन पर बैठा, इन्होंने इक्कीस साल, सात महीने, बारह दिन तक राज्य किया। ये अपने वंश की नवी पीढ़ी में थे। दुर्भाग्य वश इस राजा के कोई संतान नहीं थी, इस लिये इन की मृत्यु के बाद इनकी विधवा रानी भीमदेवी ने एक साल तक राज्य संभाला और क्योंकि राज्य का कोई उत्तराधिकारी न था इस लिये महारानी ने अपने राज्य गुरु हरगोविन्द को राज्य सौंप कर सुर पुर का रास्ता लिया। इन्हीं का हवाला देते हुये उपरोक्त गजेजिटियर[2] लिखता है—

It ended with Rani Bhim Devi, wife of Govind Chand, who died without an heir, and bequeathed the kingdom to her priestly confessor (Guru) Har Govind, whose dynasty lasted fourteen generations.

(pp. 354)

१. रा० रा० भूमिका। २. Oudh Gazetter.

'इनका राज्य रानी भीम देवी के समय में समाप्त हुआ जो निस्संतान राजा गोविन्द चंद की पत्नी थी। इसने अपना राज्य अपने राज्य गुरु को सौंप दिया जिसकी चौदह पीढ़ियों ने राज्य किया'।

इस प्रकार अर्क वंशीय राजाओं ने देहली के सिंहासन पर एक सौ इक्यासी साल, एक महीना और सोलह दिन तक राज्य किया।

❀ संडीला राज्य ❀

देहली का विशाल राज्य गुरु को सौंप देने के बाद महारानी ने परलोक गमन किया। राज्यगुरु हरगोविन्द देहली के सिंहासन का अधिकारी हुआ। इसकी चौदह पीढ़ियों ने राज्य किया। उधर अवध प्रदेश में अर्कों की शक्ति बढ़ती ही जाती थी। इन लोगों ने कई नये नगर बसाये, जिनमें इन लोगों ने सन् ईसवी की चौदवीं शताब्दी तक राज्य किया। इस जाति में दो भाई सलहिय और मलहिय नामी बड़े बीर हुये जिन्होंने अपने नाम पर सीतल पुरवा वर्त्तमान संडीला और इन के छोटे भाई मलहिय ने अपने नाम पर मलीहाबाद बसाया। लिखा है कि—

Two brothers of the tribe Salhia and Malhia are said to have founded the one Salhia Purwa now Sandila, the chief town of the Pargana; the other Malihabad, in the adjacent Pargana of that name in the Lucknow district.

(*G. P. O. Page 301.*)

'इस जाति के सलहिय और मलहिय दो भाइयों ने सलहिय पुरवा वर्त्तमान संडीला जो परगने का खास कस्बा है तथा दूसरे ने अपने नाम पर ज़िले लखनऊ के मलीहाबाद को जो उसके निकट है बसाया'।

संडीला इस जाति की राजधानी हुआ। और इसके आधीन और भी छोटे २ कई नगर हुए। राजा संडीले ही में रहा करते थे। इसी प्रकार यह लोग बहुत अरसे तक राज्य करते रहे।

अब समय की गति देखिये, देहली का राज्य, गुरु हरगोविन्द के वंशजों के हाथ से निकल गया और कई वंशों के अदल बदल होने के बाद बारहवीं शताब्दी में तोमरवंशी राजा तीसरा अनंग पाल हुआ जिसने अपने नाती पृथ्वीराज चौहान को राज्य का उत्तराधिकारी बनाया। इन्होंने पांच बार शाहबुद्दीन ग़ौरी को क़ैद किया और दया-वश छोड़ २ दिया, छटी बार पृथ्वीराज परास्त हुये और क़ैद कर लिये गये। देहली यवनों के

आधीन हुई। राज्य सिंहासन पर मुसलमानों के कई खानदान राज्य करते हुये गुजर गये। अब तुग़लक खानदान की बारी आई और इस खानदान का तीसरा बादशाह फीरोज तुग़लक सन् १३५१ ई० में देहली की गद्दी पर बैठा।

ये ज़माना चौदवीं शताब्दी का है। फीरोज़ शाह तुग़लक के समय तक अर्कवंशिय राजपूत राज्य करते रहे मगर इसके वक्त से ही इनका राज्य जाता रहा और राज्य श्री इनसे विदा हुई। अर्क लोग इस समय संडीला ही में राज्य करते थे। यह लोग हिन्दू धर्म के बड़े पक्षपाती थे।

इन्हीं दिनों सैय्यद मखदूम अलाउद्दीन ने जो नसिरउद्दीन 'चिराग़ दिल्ली' का चेला था और मुल्के अज़म का रहने वाला था, देहली से अपने पीर मुरशद की हस्ब हिदायत, संडीला पर चढ़ाई कर दी, लिखा है कि—

Sayyad Makhdum Alaud-din, the fighting apostle of Nasir-ud-din, the 'lamp of Delhi' endertook to drive out the *infidels*, and to carry the faith and arms of Islam a stage farther to the south. (*G. P. O. Page 301*)

'सय्यद मखदूम अलाउद्दीन ने जो कि नसिरउद्दीन उर्फ 'चिराग़ दिल्ली' का लड़ाकू चेला था,

अाधीन हुई। राज्य सिंहासन पर मुसलमानों के कई खानदान राज्य करते हुये गुजर गये। अब तुग़लक खानदान की बारी आई और इस खानदान का तीसरा बादशाह फीरोज तुग़लक सन् १३५१ ई० में देहली की गद्दी पर बैठा।

ये ज़माना चौदवीं शताब्दी का है। फीरोज़ शाह तुग़लक के समय तक अर्कवंशिय राजपूत राज्य करते रहे मगर इसके वक्त से ही इनका राज्य जाता रहा और राज्य श्री इनसे बिदा हुई। अर्क लोग इस समय संडीला ही में राज्य करते थे। यह लोग हिन्दू धर्म के बड़े पक्षपाती थे।

इन्हीं दिनों सैय्यद मखदूम अलाउद्दीन ने जो नसिरउद्दीन 'चिराग़ दिल्ली' का चेला था और मुल्के अज़म का रहने वाला था, देहली से अपने पीर मुरशद की हस्ब हिदायत, संडीला पर चढ़ाई कर दी, लिखा है कि—

Sayyad Makhdum Alaud-din, the fighting apostle of Nasir-ud-din, the 'lamp of Delhi' endertook to drive out the *infidels*, and to carry the faith and arms of Islam a stage farther to the south. (*G. P. O. Page 301*)

'सय्यद मखदूम अलाउद्दीन ने जो कि नसिरउद्दीन उर्फ 'चिराग़ दिल्ली' का लड़ाकू चेला था,

इन बुत परस्तों को निकालने तथा इस्लाम धर्म और शक्ती को दक्षिण की ओर एक पग और आगे बढ़ाने का भार अपने ऊपर लिया।' ऐसा मालूम होता है कि इन सैनिकों को राज्य की ओर से यह लालच दिया गया था कि संडीला फ़तह करने के बाद वहां की जागीरें उन्हें दे दी जायेंगी और उनसे किसी प्रकार का कर नहीं लिया जायगा। इसी लिये तो—

The promise of a royal revenue-free grant made the prospect of success tempting; to the soldier as was the expulsion of the *infidel* to the saint.

(*G. P. O. page 301*)

'राजकीय लगान रहित जागीरों की प्रतिज्ञा ने योद्धाओं के लिये जीत की आशा का उतना ही अधिक आकर्षक बना दिया जितना कि पुन्यात्माओं के लिये नास्तिकों का निकलना।'

यवनों की चढ़ाई का समाचार पाते ही अर्कवंशी राजा ने सैना सजाकर इनका सामना किया। कई दिन तक घोर युद्ध हुआ जिसमें बहुत से सैनिक काम आये। आखिर राजा भी वीरगति को प्राप्त हुये और संडीला मुसलमानों के हस्तगत हुआ। उपरोक्त गज़ेटियर लिखता है—

How long and how fiercely the Araks resisted we know not. Only the issue of the contest has been remembered. *(G. P. O. pp. 301)*

'कितने समय तक और किस वीरता पूर्वक अर्क अड़े रहे इससे हम अनभिज्ञ हैं केवल विवाद का फल याद है'। जान पड़ता है कि जब अंग्रेज़ लोग इन तमाम इतिहासिक बातों को तलाश कर रहे होंगे तब उन्होंने उन काग़ज़ातों की भी मालूमात की होगी जो प्राचीन समय के लिखे हुये संडीला गढ़ ही में रक्खे थे। परन्तु इनका मिलना असम्भव था क्योंकि वह तमाम काग़जात गदर के समय सिक्खों द्वारा नष्ट होकर कुये में डाल दिये गये[1] इसी लिये इस युद्धके विषय में अधिक हाल नहीं लिखा गया केवल इतना ही मालूम हो सका कि यह जाति परास्त हुई और गढ़ मुसलमानों के हाथ आया।

इसके हार जाने के बाद इन लोगों पर बड़े बड़े अत्याचार किये गये, बहुत से मरवा दिये गये और बहुतसों को धर्म से भ्रष्ट कर दिया गया जो सदा के लिये अलग हो गये, बहुत से अपने धर्म की रक्षा के लिये, मुसलमानों के अत्याचारों से पीड़ित होकर, इधर उधर चले गये जिनके वंशज अभी तक संडीला को अपना राज-स्थान मानते हैं। जैसे—

1, हमने बहुत सी बातें स्वयं संडीला जाकर ज़बानी मालूम कीं।

To this day the Arakhs of Utraula, on the Rapti, 120 miles away to the east in Gonda, recall their lost domains in Sandila.

(*Gagetteer of Oudh Province Page 301*).

'आज तक अतरौला के अरख, जो राप्ती नदी के तट पर बसा हुआ है, और गोंडा से पूर्व की ओर १२० मील के फासले पर है, अपने खोये हुये संडीले के राज्य की याद दिलाते हैं'।

पुन—श्री शेरिंग साहब लिखते हैंः—

There is a considerable Aruk Colony in Parganah Atroli, of the Gondah district, the member of which say that their ancestor came from Sandila in Herdoi.

(*H. T. & C. pp. 399*)

'गोंडा ज़िले के अतरोली परगने में अर्क लोगों की पर्याप्त संख्या में बसावट है, जिनका कहना है कि उनके पुरखे हरदोई ज़िले के संडीले स्थान से आये थे।

❀ मलीहाबाद ❀

यह नगर भी इस जाति के अगुवाओं का बसाया हुआ है, जिन्होंने एक अरसे तक इस पर हकूमत की। इनके राज्य कालमें यहां हर प्रकार का अमनो आमान था और प्रजा संतुष्ट थी। देश हर प्रकार से सुखी था जिसकी निस्बत लिखा है कि—

Even under the rule of this tribe it must have been a place of considerable importance.

(*O. G. pp. 427*)

'इस जाति के ज़ेर हकूमत भी यह एक काफ़ी प्रशंसनीय स्थान था'। मि० नेविल साहब अपने ग्रन्थ में लिखते हैं कि—

Sandila and part of Kalyanmal, which was the territory of the Arakhs, who also held the Malihabad pargana of Lucknow.

(*H. G. pp. 128*)

'संडीला और कलियानमल का कुछ भाग जो अर्कों का मुल्क था और जो लोग ज़िले लखनऊ के परगने मलीहाबाद पर भी अधिकार रखते थे'। यह लोग भी बीरता में किसी प्रकार कम न थे जिन्होंने अवध के अन्य शासकों के साथ बड़ी बहादुरी दिखाई और अपने राज्य

को बढ़ाना शुरु किया जिसका विस्तार नीचे दिये हुये लेख से मालूम होता है--

The...Arakhs seem to have been in strength in Malihabad, and to have stretched south to Kakori and Bijnaur, and along the left bank of the Sai to Sissaindi. (*G. P. O. pp 354*)

'ऐसा मालूम होता है कि मलीहाबाद के......अर्क बड़े शक्तिशाली थे जिनका प्रभुत्व काकोरी और बिजनौर के दक्षिण में, तथा सई नदी के बांये किनारे सिसांडी तक फैल गया।'

इस प्रकार यहां इन लोगों की काफी हकूमत थी। परन्तु संडीला राज्य पतन होने के साथ २ यह स्थान भी इनके हाथ से निकलने शुरु हुये। राजधानी नष्ट होने से यहां की ताक़त भी कम होने लगी मगर फिर भी सौ बरस के लगभग यहां पर इनका और अधिकार रहा। इस बीच यहांका राज्य, कुछ मुसलमानों द्वारा और कुछ गौतम जाति द्वारा नष्ट हो गया। इसी मलीहाबाद के एक स्थान दातली नगर के विषय में लखनऊ गज़ेटियर हवाला देता है—

About 1470 a tribe of Gautams came from Argal and settled in Datli of Malihabad, after

dispossessing the Arakhs gradually gaining for themselves twelve villages.

(L. G. pp. 140.)

'सन् १४७० ई० के लगभग गोतमों की एक जाति अरगल से आई और मलीहाबाद के दातली नगर में बस गई जिसने धीरे धीरे अर्कों को अधिकार रहित करके बारह गांव हासिल कर लिये'। इन गौतमों का कुछ काल तक यहां अधिकार रहा बाद में यह स्थान इन से भी पठानों ने ले लिया। लिखा है—

In like manner the Gautams of Datli in the south of Pargana have lost almost all their estates to the Pathans. They are said to have come some four hundred years ago under Deo Rai and Naya Rana from Argal, and to have ejected the Arakhs from twelve villages.

(L. G. pp 242)

'इसी तरह परगने के दक्षिण में दातली के गौतमों से पठानों ने जागीरें छीन लीं। वे कोई ४००वर्ष पहले देवराय व नयाराना के अधिपतित्व में अरगल से आये बताये जाते हैं और कहा जाता है कि उन्होंने बारह गावों से अर्कों को अधिकार रहित कर दिया था।

❀ ज़िले कानपुर में ❀

श्री शाक्य वंशी अर्क राजपूतों का प्रभुत्व ज़िला कानपुर में भी कुछ कम न था। यहां पर भी पूर्व समय इन लोगों का काफ़ी दबदबा था। यहां तक कि ये लोग ही वहां के पुराने बाशिन्दे माने जाते थे जो कहीं २ पर अब भी पाये जाते हैं। मिस्टर ई० ए० एच० ब्लन्ट साहब ने सरकारी रिपोर्ट में लिखा है :—

In a village in Cawnpore were found some Thakur Arakhs consisting of two or three families.

(*C. R. of India, 1911 pp. 351*).

'कुछ ठाकुर अर्कों के दो या तीन घराने ज़िले कानपुर के एक ग्राम में पाये जाते हैं'। परन्तु किसी २ स्थान पर ये लोग बहुतायत से थे। श्री नेविल साहब ने लिखा है :—

The Arakhs were traditionally the earliest inhabitants of Normal and other parts.

(*C. Gazetteer pp. 117*).

'अर्क लोग नारवाल तथा दूसरे हिस्सों के प्राचीन बाशिन्दे थे' और इसी बात का समर्थन करता हुआ श्री एटकिंशन साहब का लेख मिलता है जिन्होंने अपने ग्रन्थ में इस प्रकार लिखा है—

In the east of the district, or parganah Sarh Salempur, the old occupants of the country are called Arakhs.

(*C. G. pp. 50*).

'ज़िले के पूर्व या परगना साढ़ सलेमपुर में, देश के प्राचीन बाशिन्दे अर्क कहलाते थे'।

इन बहादुर अर्कों ने बादशाह अकबर के समय तक उपरोक्त स्थानों पर अपना क़बजा रक्खा, परन्तु अकबर की सहायता से यह देश इनके हाथों से निकल कर गातमपुर के जगनबंशियों को मिल गया जिन्होंने एक समय बादशाह की बड़ी खैरख्वाई की थी।

(देखो कान० गज़े० श्री० एटकिंसन साहब रचित)

❀ बेनी गंज ❀

बेनी गंज को अहमदाबाद सरसांद भी कहते थे। यहां पर भी अर्कबंशी राजपूतों का राज्य था जो करीब सात सौ बरस के गुज़र चुके कि इनके हाथ से जाता रहा। (अ० ग०) किसी कवि ने सत्य कहा है—

अर्जुन क्या बलवान थे, समय बड़ो बलवान।
भीलन लूटीं गोपिका, वे अर्जुन वे बाण॥

इसी प्रकार इस जाति ने बहुत समय तक राज्य सुख भोगा, परन्तु—

संसार में किस का समय है, एक सा रहता सदा ।
है निशि दिवासी घूमती, सर्वत्र विपदा संपदा ॥
जो आज राजा बन रहा है, रङ्क कल होता वही ।
जो आज उत्सव मग्न है, कल शोक से रोता वही ॥

(भारत भारती)

अर्थात् यह संसार परिवर्तनशील है। इसी नियम के अनुसार ये लोग भी पराक्रम हीन हुये। सरकारी गज़ेटियर लिखता है कि—

Later on when they lost all power they became known as the Arakh and Rajbansi.

(*Oudh G. pp. 354*)

'इसके बाद जब इन लोगों की ताकत कम हुई तब ये लोग अरख और राजवंशी नाम से विख्यात हुये'। अर्थात् इस समय से इस जाति के दो मुख्य भेद हो गये एक अरख और दूसरी राजवंशी। जो लोग युद्ध में हार गये वह अरख और जो राजवाले थे सो राजवंशी कहाये।

पाठक प्रेस, मेरठ।

❋ उद्योग ❋

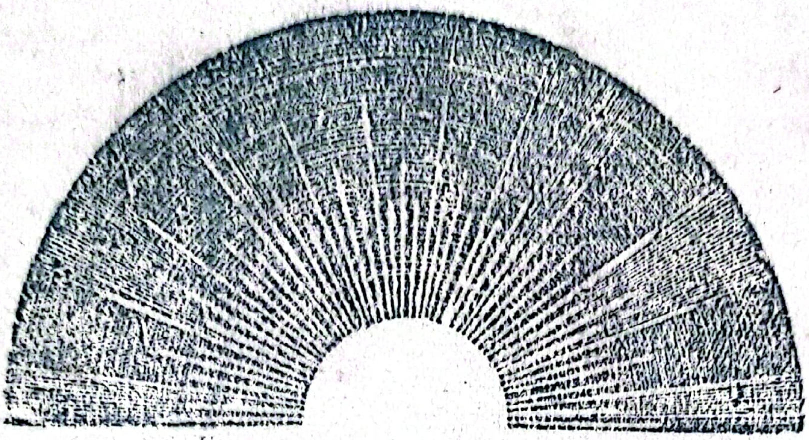

मिटादे अपनी हस्ती को, अगर कुछ मर्तबा चाहे।
कि दाना खाक में मिल कर, गुले गुलज़ार होता है॥

सज्जनों ! इस उन्नति शील समय में हर मनुष्य अपनी तथा अपनी जाति की उन्नति करना चाहता है, कारण कि जाति उन्नति से अपनी भी उन्नति होती है। हमारे महर्षियों का आदेश भी इसी प्रकार है, कि—

"उद्धरेदात्मनाऽऽत्मानं नात्मानमवसादयेत्"।

अर्थात्—अपनी उन्नति स्वयं करो कभी अधोगति मत होने दो। इसके अतिरिक्त एक स्थान पर लिखा है—

क्वाहं कोऽहं कुलं किमे सम्बन्धः को दशो मम्।
स्व धर्म्मो नहि लुप्येत ह्येवं संचिंत यद्बुधः॥

अर्थ— मैं कहां हूं, मैं कौन हूँ, मेरा कुल क्या है, मेरा सम्बन्ध कैसा है, इन सब बातों का यथार्थ विचार

बुद्धिमान जनों को रखना आवश्यक है, जिसमें अपने धर्म का लोप न होने पावे।

येनास्य पितृ रोयाताः येन् याताः पिता महाः।
तेन यायातु सतां मार्ग येन गच्छन्न रिष्यते ॥

कि श्रेष्ट पुरुषों को उस रास्ते से चलना चाहिये जिस रास्ते से उसके पिता पितामह आदि चले हों। क्योंकि उस रास्ते से चलने से कोई संसारिक आपत्ति उपस्थित नहीं होती। जो दूषित रास्ते से किसी के पूर्व पुरुष चलते हों तो उस रास्ते पर कदापि नहीं चलना चाहिये। जिस प्रकार किसी के पूर्व पुरुष चोरी, व्यभिचार और अन्याय आदि करते हों तो सदा वर्जनीय है।

इन ही तमाम बातों का विचार करते हुए जाति का सच्चा और पवित्र इतिहास आप लोगों के सामने रखने का उद्योग किया है, जिस से प्रत्येक जाति भाई को ज्ञात हो जाये कि उनके पुरखे किस आचार विचार के थे, उनकी धर्म धारणा क्या थी तथा उसमें कितना जाति प्रेम भरा हुआ था। वे लोग जाति की शान पर ज़रा सा धब्बा आना भी मृत्यु तुल्य समझते थे। हम लोगों का धर्म है कि जाति के मस्तक को ऊंचा करें और अपने पूर्वजों के पवित्र इतिहास से उचित शिक्षा ग्रहण करें

जिस से जाति का अवश्य कल्याण होगा।

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रस धार नहीं।
वह हृदय नहीं है, पत्थर है, जिसमें स्वजाति का प्यार नहीं॥

मेरठ-सभा के भाइयों का एक ग्रुप

(दाहिने से बांई ओर देखते चलो)

पीछे खड़े हुये—उत्तिम सिंह, मुल्ला सिंह, जिया लाल सिंह, खेमकरन सिंह, पन्ना सिंह।

कुर्सीपर बैठे हुये—नन्हे सिंह, तोते सिंह प्रधान मंत्री,
मूलचन्द सिंह सभापती,
देवी सिंह (१) सहा० (प्रधान मंत्री,)
देवी सिंह (२) मंत्री।

आगे बैठे हुये—बैजू सिंह, चोखे सिंह, किलोल सिंह, पच्चा सिंह।

---

* जाति दिग्दर्शन और यात्रा *

(२५ अप्रैल से २५ जून तक)

अम्बाला २५ अप्रैल १९३०— यहाँ पर जाति भाइयों की दो सभायें क़ायम थीं, जिन में दोनों ओर के भाई जाति प्रेमी और उद्योगी थे। मुख्य कर—

एक सभा में श्री छत्तर सिंह, परसराम सिंह, जमना प्रसाद, किशोरी सिंह, राम लाल, उमराव सिंह, अर्जुनसिंह हुलासी सिंह, राम दीन, लेखराम, निरञ्जन सिंह, रामकिशन, सोहनसिंह, छेदीलाल, सुरजीसिंह, बैजूसिंह सुमेरसिंह, रनजीत सिंह, नन्दराम, उमरावसिंह, मैकूसिंह चेतराम, रामदीन, खगेश्वर दयाल, दुर्गाप्रसाद, छेदीलाल मंगलसिंह, कल्लूसिंह, नैनसुख, बंदीसिंह, धिराऊसिंह, द्वारकाप्रसाद, साधोसिंह, बिहारीसिंह, हीरालाल, छेदासिंह, दुर्गाप्रसाद, बभूतीप्रसाद, बल्लूसिंह, बलदेवसिंह रामसहाय, बाबूलाल, बलदेवप्रसाद, शिवरतन सिंह मँहगेप्रसाद, ललतूराम, रामचरन, मंगलीसिंह, कल्लूसिंह, मुन्नालाल, दुर्गाप्रसाद, बलदेवसिंह, रामचरन, खुनूसिंह उमरावसिंह, केदारसिंह, जियालाल, हरीसिंह, बसंतलाल, देवीसिंह, होरीलाल, गिरधारीसिंह, चिरञ्जीलाल, चौधीसिंह, हनूमान, बहादुरसिंह, सेवाराम, परनसुख, भगवान-

श्री मातादीन सिंह जी,
(रावलपिंडी)

दीन। तथा दूसरी सभा में मथुराप्रसाद, मूलचन्द, कालीचरन, सोहन लाल, लक्ष्मण सिंह, दुलारे सिंह, कल्लूसिंह, कन्हीराम, छोटासिंह, रघूसिंह, दौलतराम, देशराज, मन्नाराम, मंगलसिंह, घूरेसिंह, गज्जूसिंह, बंदीराम, बिहारीसिंह, परसादीसरन, देबीसिंह, ज्वाला-प्रसाद, रामदीन, जवाहरसिंह, जियालाल, रामभरोसे, दातादीन, कन्हूसिंह, इत्यादि २ थे। अम्बाला सभा के पुरोहित पं० मुकन्दलाल जी से भी भेंट हुई, ये सभा के बड़े सहायक हैं।

हम आशा करते हैं कि यह लोग सदैव जाति उन्नति करते रहेंगे।

देहली, १ मई १९३०—श्री दुर्गा प्रसाद जी व श्री माता दीन सिंह जी आदि २ महानुभाव यहाँ पर सभा के मुख्य कार्यकर्ता थे। जिनमें श्री मातादीन सिंह का अब रावलपिंडी स्थानान्तर होगया है।

कन्नोज, १४ मई १९३०—यहां के भाई बड़े जाति प्रेमी हैं। इनकी भजन मंडली बड़ी श्रेष्ठ और उपदेशक है। यहाँ के मुख्य भाइयों के नाम निम्न लिखित हैं—श्री मैकूसिंह जी, मथुरा प्रसाद, कालिकाराम, बाबूराम, बद्रीप्रसाद, हुलासीराम, मनोहरसिंह, कामता प्रसाद,

मँगलदास, आनन्दीदास, भिखारीसिंह, रामसहाय, भिखारी राम, हीरासिंह, छेदनसिंह, माधोसिंह, गुलाबसिंह, पुरईसिंह, छेदासिंह, प्यारेलाल, खेमासिँह, हरसुख बनवारी लाल, रामप्रसाद, जगनसिंह, मुरलीसिंह, मुन्नासिंह, खिल्लीराम, कलेश्वरसिंह, बिन्दासिंह, अजोध्याप्रसाद।

रियासत तेरवा, २६ मई १९३०— यहाँ पर ईश्वरी प्रसाद, रामसहाय, कालीचरन, त्रिलोकीसिंह, आदि २ भाई मुख्य हैं। इन लोगों के कार्य व्यवहार बहुत अच्छे हैं, जिनमें कुछ खेती बारी करते है और कुछ राज्य कर्मचारी हैं।

चंदीपुर, ९ जून १९३०—श्री बिहारी सिंह व भारतसिंह आदि २ जाति के बड़े सेवक हैं।

संडीला, १० जून १९३०— यहां श्री जगन्नाथ सिंह जी बड़े प्रेमी और सज्जन हैं।

मौज़ा कौड़िया, ११ जून १९३०—यहां पर एक बड़ी सभा हुई जिसमें अनेकों स्थान के बहुत से भाई एकत्रित थे, जिनके नाम मय तादाद साथियों के निम्नलिखित हैं—

(कल्लूदास, सिकरिया ७५०), (गनेशीसिंह, बछलाहन ३००), (निवाजीसिंह पहसौड १५०), (रामलाल, कौड़िया २५०), (मुन्नासिंह, जाजीपुर १२५), (पीतम, मुराउखेरा ३००), (बेचासिंह, डाले १५०), (डल्लासिंह, भोगीपुर १००), (बड़काऊ, कटकी ३००), (माखनसिंह, बिजौली ८०), (तिलक बहेरिया २५०), (दीवानसिंह, परसा १२५), (दुर्गाप्रसाद, कलियानपुर १२५), (गंगू, नरायनपुर २००), (गिरधारी, अटरिया १००), (टीका, अविया खेरा १२५), (मुन्नूसिंह, ककराही १००), (जगन्नाथ संडीला, ५०), (रामदीन ५०), (अंगने, चौधी दुलारे इत्यादि ५००), (छङ्गा, उत्तरकोन ५०), (मेमा, जगसिया ५०), (कालका पड़री ५०), (सरजूसिंह मलीहाबाद १००), (उमेदसिंह, रामनगर ४००), (कीरतीसिंह, करौना १२५), (उजागरसिंह, अकबरपुर १००), (देवीसिंह, तीलन १००), (बालासिंह, तरौने १००)।

दूसरे दिन शाम को भाइयों से विदा होकर संडीले वापिस हुए, मार्ग में रात्रि को भैंसासुर नामक एक गाँव में मुक़ाम किया। क्योंकि बहुत से भाई लोग साथ थे और गाँव क़रीब २ जाति भाइयों से ही भरा हुआ था इस लिये किसी प्रकार का कष्ट नहीं हुआ। रात्रि भर

भजन इत्यादि होते रहे। जिस भाई ने जहाँ सुना उसी वक्त मिलने चले आये। सुबह दिन चढ़े सँडीला आये। बहुत सी बातें मालूम कीं। भाई लोगों की ऐसी कृपा थी कि गाड़ी छूटने तक बराबर दर्शन देते रहे। धन्य संडीला नगरी और धन्य यहाँ के निवासी भाई जो नित्य मातृ भूमि के दर्शन करते हैं।

आओ हम पहले आपको पूर्वजों की स्थापित की हुई मातृभूमि का दिग्दर्शन करायें, देखें कि यवनों के समय में इसमें क्या २ इतिहासिक घटनायें हुईं तथा इस की वर्तमान स्थति क्या है। पहले इस नगर की सीमाओं का वर्णन करते हैं, तद्‌पश्चात इतिहास लिखेंगे।

सीमायें—"हरदोई जिले में तहसील संडीला एक मुख्य प्रति भाग है। यह २१३ ग्रामों का समुदाय है। उसकी उत्तरीय सीमा पर परगना गोपामऊ, पश्चिमी पर परगना बालामऊ और मल्लावां, दक्षिण-पश्चिमी और दक्षिणी पर परगना बांगरमऊ, सफीपुर और लखनऊ के मोहन औरस, पूर्वीय पर परगना गुण्डवा और कल्यानमल और गोमती के पार सीतापुर का परगना औरंगाबाद है। सई इसके दक्षिण-पश्चिमीय और दक्षिणीय सीमा के अधिक भाग में बहती है।

इतिहास—जान पड़ता है कि मुसलमान, संडीला फतह करने से बहुत पहले इसके पड़ोस बिलग्राम में आकर बस गये और समय पाकर इस पर आक्रमण कर दिया। लिखा है कि—

A century and a half-earlier in the reign of Shams-ud-din Altamash, the Sayyad had driven out the Hindu lords of Bilgram and settled themselves there.

(G P. O. pp 301)

'शमशुद्दीन अल्तमश के राज्य में डेढ़ शताब्दी पहले सय्यद ने हिन्दू सरदारों को बिलग्राम से बाहर कर दिया और स्वयं वहां बस गये।' उपरोक्त गज़ेटियर बतलाता है कि—

Sandila was their next acquisition of importance in this part of the country.

'देश के इस भाग में संडीला उनकी दूसरी मुख्य प्राप्ती थी।'

The inventive piety of the Muhammadans dispenses with the traditional clue to the derivation of the name and asserts that it is traceable to an exclamation of Sayyad Makhdum Ala-ud-din who when on his way thither from Delhi cast into the Jumna the grant or charter received by him from

his imperial master saying, Sanad Allah, God be my charter.

'मुसलमानों का धर्म प्रेम इस नाम की उत्पत्ति में एक परम्परागत चिन्ह से विशेष सम्बन्ध रखता है और इसी बात का दृढ़ साक्षी है जैसा कि सय्यद मखदूम अलाउद्दीन की घोषणा में पाया जाता है जब कि उसने दिल्ली से जमना पार जाते हुये अपने राज्य मालिक से 'सनद अल्लाह' अर्थात् 'ईश्वर मेरा अधिकारी हो' नारे के साथ राज्य पत्र पाया था।

Accordingly he named his first conquest Sanad-illa or Sandila, though till then it had been known as Sital Purwa. Taking as his own share a rent-free grant of 360 bighas he built and settled upon it, and then it is called to this day Makhdumpura in remembrance of him; and his dargah stands upon it. The tyranny and exactions of Muhammad Shah Tughlaq at Delhi are said to have contributed to the development of Sandila whither fled many a refugee. Chiefly of the Brahman and Chhattri castes. In the time of Sher Shah the settlement had become so crowded that Sayyad Husen founded a new town adjacent to it and styled it Ashraftola. Upto this time no Government officer had been posted

at Sandila, so that, like the cave of Adullam, it was a convenient refuge for all who wished to keep out of the way of the imperial writs; but about the time of Akbar the Gazi was transferred hither from Mahona, and the other pergana officials came in time to be posted here. Firoz Shah twice visited Sandila in 754 Hijri (A. D. 1353) on his mach to Lucknow, and in 776 Hijri (A D.1374) on his way to Bahraich. A mosque bearing the date 769 Hijri (A.D 1367) was built by his order.

'तदानुसार उसने अपनी विजय का सनद इल्ला या संडीला नाम रक्खा। यद्यपि तब तक वह सीतल पुरवा कहलाता था। ३६० बीघे का लगान रहित अपना भाग लेकर उसने वहाँ मकान बनाया और बस गया, यह अब भी उसकी याद में मख़दूमपुरा कहलाता है और उसकी दरगाह यहाँ पर बनी है। मौहम्मद शाह तुग़लक़ की क्रूरता और पिशाचता संडीला के बनाने में एक बड़ा भारी हाथ रखती है कारण कि दिल्ली से इस प्रकार भागे हुए लोगों ने जो मुख्यता ब्राह्मण और क्षत्रिय वर्ण के थे इसको बसाया था। शेरशाह के समय में आबादी इतनी घनी हो गई थी कि सय्यद हुसेन ने इसके निकट नया नगर बसाया और इसका नाम अशरफ़ टोला रक्खा। इस समय तक किसी सरकारी अफ़सर की

संडीला पर नियुक्ती नहीं हुई थी, इस लिये अदुल्लम की गुफ़ा की भाँति यह उन लोगों के लिये शरण का उपयुक्त स्थान था जो राज्य के आज्ञा पात्रों से अलग रहना चाहते थे। परन्तु अकबर के समय में ग़ाज़ी का महोना से इधर स्थानान्तर होगया और दूसरे परगना अफ़सरों की भी ठीक समय में नियुक्ती हो गई। फ़ीरोज़ शाह ने संडीला को दो बार देखा ७५४ हि० (१३५३) में जब लखनऊ जा रहा था और ७७६ हि० (१३७४) में जब बहराइच जा रहा था। एक मसजिद जिस पर ७६९ हि० (१३६७) तिथी पड़ी है उसकी आज्ञा से बनी।

The restoration of Humayun brought trouble upon Sayyad Husen, who had been faithful to the fortunes of Sher Shah. The town was plundered by Humayun's troops; Sayyad Husen was dispossessed of his grant, and a force was quatered here. The land which for three centuries had been held by Sayyads were made over to Chandels. But the tenure of the Chandels did not last long. The Sayyads regained court favour and a portion of their lost possessions. Molvi Muhammad Moia ingratiated himself with Alamigr, who conferied upon him in jagir for military service, Ibrahimpur,

Tiloi, and ten other villages, and when, he died in Bihar, sent his corpse to Sandila to be burried with his forefathers. Most of the Sayyad's grants were resumed and charged with revenue after Shuja-ud-daula's defeat at Buxar, and the remainder were resumed by Sadat Ali Khan*.

'हुमायूं के फिर राज्य रोहन से सय्यद हुसेन पर जो शेरशाह का भक्त था आफ़त आई। नगर को हुमायूं के दलों ने लूटा, सय्यद हुसेन की देन बन्द कर दी गई और एक सेना यहाँ रख दी गई। वह भूमि जो तीन शताब्दियों तक सय्यदों के अधिकार में रही अब चँदेलों को दे दी गई। परन्तु चँदेलों का अधिकार अधिक समय तक न रहा। सय्यदों ने राजा की कृपा और खोई हुई जायदाद का एक भाग फिर प्राप्त कर लिया। मौलवी मुहम्मद मोइया, आलमगीर की दया का पात्र हो गया और अपनी सेना सम्बन्धी सेवा के बदले में इब्राहीमपुर, तिलोई और दस अतरिक्त गाँव जागीर में पाये और जब वह बिहार में मर गया तो उसकी लाश उसके पिता और पितामह की क़ब्रों के पास गाड़ने को सँडीला भेज दी गई। सय्यद की अधिकतर

*Taken from G. of Prov. of Oudh Vol III pp. 301.

जागीरें शुजाउद्दौला की बकसर की हार में वापिस लेली गई और उन पर लगान प्राप्त किया गया। जो बच गई थीं उन्हें सआदतअलीखाँ ने ले लिया।

वर्तमान समय यह नगर ब्रिटिस सरकार के आधीन और हर प्रकार से भरा पुरा है। हिन्दी भाषा के प्रसिद्ध कवि भक्त सूरदास जी ने यहीं जन्म लिया था। यहाँ से विदा होकर चंदीपुर आये और माधोगंज, बिलग्राम, अटवा, हरेईपुर, तेरवा आदि २ स्थानों में सभायें हुईं। मुख्य २ भाइयों के नाम जो सम्मिलित थे निम्न-लिखित हैं—

माधोगंज, १४ जून १९३०—(जैलीसिंह सहजना, छेदी अटवा, दुरजनसिंह सेलापुर, खेमन गंज बरौकी, बिहारीसिंह चंदीपुर, द्वारकाप्रसाद सुमेरगंज, अंगनेसिंह फुलई, मैकूसिंह माधोगंज, इत्यादि)।

बिलग्राम, १६ जून १९३०— (बिहारीसिंह चँदीपुर, सीताराम हीरा रोशनपुर, उमेदसिंह, लक्ष्मण-सिंह, चिरँजीलाल, हज़ारीलाल, रोहनसिंह, मोहन, मैकू-सिंह, त्रिलोकी, छेदासिंह, मुन्नालाल, सुमेरसिंह, घूरेसिंह, रामदयाल, दुरावन सिंह नन्दराम और कनौजी)। यहाँ पर एक सभा भी क़ायम की परन्तु कुछ उद्योग नहीं किया।

अटवा, २० जून १९३०—(नेवलसिंह नेकवापुर, परसू फ़तेहपुर, देब्बा हरेईपुर रघूदासिंह बिलग्राम, बलदेवसिंह मुसकाबाद, गज्जूसिंह बढ़परापुर, खेमकरन कटिया, केवलसिंह गोलहपुर, ननही बाहमलपुर, अंगनेसिंह चकनन्दपुर, नन्दलाल सुमेरगंज, भारतसिंह चँदीपुर, गुलज़ारीप्रसाद काज़ीपुर, चेतासिंह भंवरा, अंगनेसिंह फुलई, जित्ता मेंहदीपुर, मुन्नालाल सरैयाँ, भोलईप्रसाद सहलमापुर, दुरजन नेवादा, मुल्लासिंह, रूदामऊ, भीतू दोंतेलपुर, दुरगा ललवापुर, कुंजन कुरसट, छेदीलाल अटवा, फ़क़ीरे सेवढई, तेजासिंह रुकनापुर, मुरली पिपरायां)।

हरेईपुर, २२ जून १९३०—(गयादीन फुलई, मेहरबान कोट, मुरलीधर देवीपुरवा, नन्हूसिंह इब्राहीमपुर, छेदा बेलथरा, सोभन गोवापट्टी, हीरा आलापुर, मन्दारी सिंह बंदरहिया, मुन्नालाल सरैयां, खेम्मनसिंह नेकवापुर, नन्दलाल सुमेरगंज, बिहारी चंदीपुर, गयादीन रुकनापुर, शिवचरन, देब्बा हरेईपुर, झब्बूसिंह गंज)।

मौज़ा तरवा, २५ जून १९३०— बलदेवसिंह मुसकाबाद, रामचरन हेफतापुर, देवीदीन गढ़ी, पेमा, हेमा पुन्नासिंह नेकवापुर, बलदेव गौस, ठकुरी मऊ, नन्दलाल सुमेरगँज, बिहारी चंदीपुर, बिहारीसिंह कुरसट, भिकारीसिंह रुकमन पुर, लेक्खा भिटाई, मुल्लासिंह पिपरावाँ, रत्ता साई,

कुन्नासिंह ककराखेरे, खग्गासिंह संकरगढ़, मोहन सहजना, बेनीसिंह रियासत संगरूर, धन्नासिंह, नन्हूसिंह, बेचासिंह, लालसहाय, तारासिंह, वगैरा मौज़ा तेरवा)।

कानपुर— हम यहाँ के भाइयों के दर्शन न कर सके, परन्तु यहाँ के भाई भी बड़े प्रेमी और उद्योगी हैं जिनमें मुख्यकर— छेदालाल, बसंतलाल, बनवारीलाल, दुर्गादास, सूरजप्रसाद, भैकूलाल, रामलाल, नन्हूप्रसाद आदि आदि हैं।

---

* विद्वानों की सम्मति *

हम ऊपर लिख आये हैं कि समय परिवर्तनानुसार ये लोग शक्ति विहीन हुए, राज्य व धन बल सब जाता रहा जिसे खोये हुये आज लगभग छः सौ वर्ष के व्यतीत हो गये। इस अरसे में श्री विद्या देवी ने भी अपनी दया दृष्टि फेर ली जिसके अभाव और मुसलिम अत्याचार से इन लोगों को अनेक प्रकार की यातनायें भोगनी पड़ीं। हमारे प्राचीन ग्रन्थों की दशा जो यवन काल में हुई वह किसी से छिपी नहीं है तथा नवीन ग्रन्थों में इन लोगों का सूक्ष्म से सूक्ष्म इतिहास कहीं २ पर मिलता है जो किसी २ विद्वान ने कृपा कर अपने सदुद्योग और मालूमात (Researches) करके यथावत् छाप दिया

है। जब अपनी दशा अपने आप ही संभालने, लिखने अथवा लिखवाने की कोशिश नहीं की तब और लिखें तो कौन लिखें। यही कारण है कि आज इन लोगों की उत्पत्ति आदि विषय में अनेक प्रकार की गाथायें तथा मत भेद हो रहा है। परन्तु फिर भी जिन योग्य विद्वानों ने अपने सुपरिश्रम से अनेक प्रकार की खोंजें तथा निर्णय करके जो कुछ अपने अमूल्य ग्रन्थों में सँग्रह किया है वह उनको अनेकों बार धन्यवाद देते हुए उद्धृत करता हूं—

पं० ज्वाला प्रसाद जी मिश्र ने अपने ग्रन्थ में अर्क वंश जाति को क्षत्रिय खँड में लिखा है।

(जा० भा० पेज ३ छापा बंबई)

बहुत समय तक ये लोग 'अर्कवंशी' ही कहाते रहे इसके बाद 'अर्क' फिर अरक अथवा अरख कहलाये। इन्हीं का हवाला देते हुये एक विद्वान ने अपने ग्रन्थ पेज १०८–९ में लिखा है कि—

"महा भाष्य के पारिभाषिक सूत्र "अर्द्धमात्रा लाघवेन वैश्याकरणाः पुत्रोत्सव मन्यन्ते" के अनुसार 'वँश' का लोप होकर केवल अर्क शब्द रह गया, वही अर्क जाति

प्रसिद्ध हुई और फिर अर्क कहाते २ अरख कहाने लग गये अतएव ये लोग द्विजाति हैं यानी क्षत्रिय हैं।

आगे लिखा है कि "इस जाति के अगुवाओं ने संडीला और मलीहाबाद बसाया था और सन् १४०८ ईसवी के लगभग इस जाति के चहुं ओर खूब दौर दौरे थे तथा ये ही उस समय के राजाधिकारी थे"।

(जा० अ० प्र० संस्करण)

यदि 'अर्कवंश' शब्द पर तनिक भी ध्यान दिया जाय तो सहज ही में पता चल जाय कि यह जाति वास्तव में किस वंश में है। देखिये अर्क और वंश दोनों के योग से ही 'अर्क वंश' शब्द बना है, जिसका अर्थ 'सूरज वंश' के हैं। अर्क + वंश = अर्कवंश = सूरज वंश। देखो संस्कृत-इंगलिश डिक्शनेरी— अर्क arka के अर्थ सूरज The Sun. (Sanskrit English Dictionary by Mr. Benfey Page 48).

महाभारत में लिखा है—

दिवः पुत्रो बृहद्भानुश्चक्षुरात्मा विभावसुः।
सविता स ऋचीकोऽर्को भानुराशावहो रविः॥ ४२॥
पुरा विवस्वतः सर्वे मह्यस्तेषां तथावरः।
देवभ्राट् तनयस्तस्य सुभ्राडिति ततः स्मृतः॥ ४३॥

सुभ्राजस्तु त्रयः पुत्राः प्रजावन्तो बहुश्रुताः।
दशज्योतिः शतज्योतिः सहस्रज्योतिरेव च ॥ ४४ ॥
दश पुत्रसहस्राणि दश ज्योतेर्महात्मनः।
ततो दशगुणाश्चान्ये शत ज्योतेरिहात्मजाः ॥ ४५ ॥
भूयस्ततो दशगुणाः सहस्रज्योतिषः सुताः।
तेभ्योऽयं कुरुवँशश्च यदुना भरतस्य च ॥ ४६ ॥
ययातीक्ष्वाकुवँश्च राजर्षीणाश्च सर्वशः।
संभूता बहवो वँशा भूतसर्गाः सुविस्तराः ॥ ४७ ॥

अर्थ—बृहद्भानु, चक्षुरात्मा, विभावसु, सविता ऋचिक, अर्क, भानु, आशावह और रवि इतने दिव के पुत्र हुये ॥ ४२ ॥ सूर्य के सकल पुत्रों में मनु श्रेष्ठ था, उसका पुत्र देवभ्राट् और देवभ्राट् का पुत्र सुभ्राट् हुआ, ऐसा शास्त्र में कहा है ॥ ४३ ॥ इस सुभ्राट् के प्रजावाले और परम प्रसिद्ध बड़े भारी विद्वान् दशज्योति, शतज्योति और सहस्रज्योति नाम वाले तीन पुत्र हुये ॥ ४४ ॥ महात्मा दशज्योति के दश हज़ार, इस से दश गुणे शतज्योति के और उस से दश गुणे पुत्र सहस्र ज्योति के हुए, उनसे कुरु, यदु, भरत, ययाति और इक्ष्वाकु आदि अनेकों राजर्षियों के बड़े विस्तार वाले वँश हुए तथा अन्य प्राणियों के विस्तार वाले वंश हुए ॥ ४५–४७ ॥

(महाभारत आदि पर्व प्र० अ०)

जाति भास्कर नामक ग्रन्थ में लिखा है कि यह लोग भी अपने को सूर्यवंशी कहते हैं और अब अरख कहाते हैं। (पेज ११५।)

श्रोत्रिय पं० छोटे लाल जी शर्म्मा M.R.A.S. (लंदन) पुरातत्व विशारद, व्याख्यान भूषण, महामंत्री-हिन्दू-धर्म वर्ण व्यवस्था-मंडल फुलेरा रियासत जैपुर ने अपने सँशोधित सँस्करण 'जाति अन्वेषण' प्रथम भाग पेज २४५ में इस जाति की उत्पत्ति आदि का वर्णन करते हुये इस प्रकार लिखा है कि— "अर्क नाम सूर्य्य और वंश नाम सँतति, कुल, अर्थात् जो सूर्य्यवंशी थे वे लोग ही अर्कवँशी कहाये गये, जिन सूर्य्यवंशियों के पास राज्य व धन बल रहा वे सूर्य्यवँशी राजपूत कहाते रहे और जिन्हें विपत्तिवश (प्राण रक्षार्थ) इधर उधर भागना पड़ा वे बिचारे कृषि आदि के धन्दे में लग कर निर्वाह करने लगे वे कहीं अर्कवँशी, कहीं अरक और कहीं अरख कहलाने लगे"।

आगे लिखा है कि इस जाति का राज्य मुरादाबाद और लखनऊ के बीच में रहा[1]

The Arakhs held the tract till towards the end of the fourteen century [2].

'अर्कों का राज्य चौदहवीं शताब्दी के अन्त तक रहा।' मि० एच० आर० नेविल साहब, आई० सी० एस० अपने ग्रन्थ में लिखते हैं—

All the ancient village sites in the Sandila tahsil are ascribed to the Arakhs. *(Page 63).*

'संडीला के पुराने ग्रामों के खंडरों पर अरकों की मोहर प्रतीत होती है।'

जाति और क़ौम नामक ग्रन्थ पहली जिल्द पेज ८२ में लिखा है—

The Arakhs appear at an early date to have obtained considerable power in Oudh, especially in Herdoi

'अरख लोगों ने अवध प्रान्त में विशेष कर हरदोई ज़िले में कभी पहिले अच्छी शक्ती प्राप्त कर रक्खी थी।'

१- मंडल सीरीज़ पहली। 2- Oudh G.

एक सुलतांपुर निवासी विद्वान पंडित इस जाति के विषय में अपनी राय देते हैं—

'अर्क वंशीय राजपूतों के बारे में मैंने महाभारत आदि पुराणों में और बहुत स्मिर्तियों में अच्छी तरह से देखा है और बहुत से प्रमाण भी मौजूद हैं।

(हस्त०) पँ० जगन्नाथ जी शर्म्मा,
सुलतानपुर निवासी।

संयुक्त प्रान्त के अन्य हिन्दू शासकों के साथ हवाला देते हुए एक अंग्रेज़ी ग्रन्थ इस अर्क जाति के विषय में भी लिखता है—

The Arakhs...were dominent even since the Mohammadan times.

(Cyclopaedia of India pp. 236).

'यवनकाल से पहिले अर्क .... लोग शाशक थे।'

श्री शेरिंग साहब लिखते हैं कि—

The Aruks of Khairabad state that their ancesters formerly ruled in Chittor, and that members of their tribe abound in other trans Gangetic districts.

(H. T. & C. Vol I pp. 99).

'खैराबाद के अरक कहते हैं कि उनके पुरखों ने पहले चित्तौड़ में राज्य किया और उनकी जाति के मनुष्य गँगा के आस पास के ज़िलों में बहुतायत से हैं।'

इन समस्त प्रमाणों में इनका शुद्ध क्षत्रित्व झलकता है। अब गाथाओं का समालोचक कीजिये।

---

* गाथायें *

इस जाति की उत्पत्ति आदि विषय में पूरब में एक अजीब ही गाथा प्रचलित है। कहते हैं कि इनकी उत्पत्ति भृगुवंशी श्री परसराम द्वारा ही हुई है। इस ही के अनुसार एक अंग्रेज़ विद्वान को किसी स्वदेशी सज्जन ने लिखवा भी दिया है। लिखा है कि—

Another story goes that Parasurama was once meditating in the jungle. From the dirt of his body he made a figure, and gave it life by cutting his little fiinger and sprinkling blood upon it. *(T. & C. pp. 81)*

'दूसरी कहावत है कि एक समय परसराम जी बन में तप कर रहे थे उन्हों ने अपने शरीर की धूलि से एक मूर्ति बनाई और अपनी कनिष्ट उङ्गली का रक्त छिड़क कर इसे जीवित किया।'

यदि यह सत्य मान लिया जाय कि वास्तव में श्री परसराम जी ही इस जाति के आदि पुरुष हैं तो इस जाति को ब्राह्मण वर्ण में होना चाहिये। परन्तु यह बात नहीं है। हमारा अनुमान है कि इस जाति का पाँचवाँ भेद जो 'अदरीज' नाम से विख्यात है, यह ब्राह्मण वंश से निकला हुआ माना जाता है अर्थात् यह लोग अपने को ब्राह्मण की सँतान मानते हैं। इनके विषय में मि० क्रुक साहब ने अपने जाति और क़ौम नामक ग्रन्थ जिल्द पहली पेज ८२ में लिखा है—

(Which is the highest of all, claiming descent from a Brahman).

'जो सब से ऊंचे हैं और अपने आप को ब्राह्मण की संतान होने का दावा करते हैं'— सम्भव है कि इन्हीं लोगों के पूर्वजों की उत्पत्ती श्री परस राम द्वारा ही हुई हो जो किसी समय अर्कों में मिल गये हों और अपने आप को परसरामी कहते हों।

बुन्देल खंड प्रान्त में एक और ही कहावत प्रसिद्ध है, कहते हैं कि यह जाति खंगार जाति में से निकली है जो क्षत्रीय वंशज हैं। इसका ब्योरा Census Report of India 1931 मनुष्यगणना रिपोर्ट सन् १९३१ पृष्ठ ६३८

में लिखा है An offshoot of Khangar खंगारों की एक शाख। Chiefly found in Bundel Khand and Central parts of the province जो विशेषतया बुन्देल खंड और प्रान्त के मध्य भाग में पाये जाते हैं। मगर यह बात बिलकुल समझ में नहीं आती है और सम्भव है कि इसी बात पर शंका करते हुए मिस्टर ई० ए० एच० ब्लन्ट साहब, आई० सी० एस० ने सरकारी रिपोर्ट पृष्ट ३५४-५५ में लिखा है The Arakhs-Khangar seems to be a real case of confusion. 'अरख-खंगार जाति का एक अच्छा गड़बड़ झाला है।'

वास्तव में बात यह है कि इस जाति का दूसरा भेद 'खागर' कहलाता है। सम्भव है कि इन लोगों का निकास खँगार जाति से ही हो जो किसी समय अर्कों में मिल गये हों क्योंकि एक विद्वान ने खंगार व खगर एक ही जाति मानी है। (देखो क्ष० वँ० प्रदीप भा० दू० पेज ७८०)

एक विद्वान ने अपने ग्रन्थ में लिखा है कि कुछ अर्क लोग अपने आप को रतनदिक्ष की संतान मानते हैं जो महाभारत की लड़ाई में मौजूद थे। लिखा है—

Others of the Araks say that they are descended from Ratan Dich, who lived in the days of the Mahabharat war.

(H. T. & C. Vol. I pp. 399).

'दूसरे अर्क कहते हैं कि वे रतनदिक्ष की संतान हैं जो महाभारत युद्ध में थे'। जान पड़ता है कि कुछ लोग जो रतनदिक्ष के बँशज थे किसी समय अर्कों में मिल गये होंगे वही लोग अभी तक अपने आप को उन की संतान मानते हैं। और सम्भव है कि इन्हीं को 'रतनदत्तसिंह' नाम से सम्बोधन किया गया है। लिखा है—

Ratan Dat Singh-- A Thakur of Pataungarh, near Nimkhar.

'ये रतन दत्त सिंह, नीमखार के समीप पतौनगढ़ के एक ठाकुर थे।'

और सुनिये—

बाबू साँवलदास भूतपूर्व डि० कलेक्टर ज़िला हरदोई के आधारानुसार मि० क्रूक साहब ने एक स्थान पर लिखा है कि राजा तिलोक चँद ही इस जाति के आदि पुरुष थे। यदि यह मान लिया जाय कि वास्तव में तिलोक चंद ही इनके आदि पुरुष थे तो

इस से यह सिद्ध होता है कि राजा तिलोक चंद से पहले अर्थात् सन् ९१८ ई० से पहले यह जाति नहीं थी क्योंकि राजा तिलोकचंद का होना इन्हीं तारीखों में पाया जाता है। परन्तु यह बात नहीं है क्योंकि एक चीनी-यात्री के कथन द्वारा यह पता चलता है कि यह जाति इस से भी बहुत पहिले क़ायम थी बल्कि यहाँ तक कि इस जाति के नाम पर 'अकौना' नामक एक नगर भी बसाया जा चुका था, जिसका हवाला बहराइच गज़ेटियर देता है—

Ikauna itself is supposed to be the old town of Arkhauna which is mentioned by the chinese traveller Hiuen Tsiang.

(B. G. pp. 194).

'इकौना पुराने क़सबे अखौना का अपभ्रन्श ही मालूम होता है जिसका वर्णन चीनी-यात्री ह्वाँग-साँग ने किया था'। अर्थात् इकौना नगर जोकि शब्द 'अखौंना' का ही बिगड़ा हुआ रूप है, यह भी हमारी जाति का वाचक है, इससे पता चलता है कि यह भी किसी समय हमारी जाति का निवास स्थान था जिसको ह्वाँग-साँग ने ठीक समझा। ह्वांग-साँग चीन देश का रहने वाला और बुद्ध मत का मानने वाला था जो सातवीं शताब्दी अर्थात्

महाराजा हर्ष के समय में भारत भ्रमण करने तथा अपने मत के विषय में अधिक मालूमात करने आया था। इस ने भारत के विषय में बहुत कुछ लिखा है जो इतिहासों में वर्णित है और इसका बहुत कुछ हाल जनरल कनिंघाम साहब बहादुर ने भी अपने अँग्रेज़ी ग्रन्थ (Ancient Geography of India) एनसिअन्ट ज्योग्राफी आफ इन्डिया में लिखा है तथा इन के उस समय के दिये हुऐ नक्शे (map) में भी इकौना (Ikauna) नगर विराजमान है। जब हमारी जाति से बसा हुआ नगर सातवीं शताब्दी में विद्यमान था तब यह कैसे सम्भव हो सकता है कि सन् ९१८ ई० से पहले यह जाति नहीं थी।

वास्तव में राजा तिलोक चंद इस जाति के आदि पुरुष नहीं थे वल्कि इस वंश में बड़े पराक्रमी बीर योद्धा थे जिनके राज्य परिवार को 'अर्क-राजवंशी' का खिताब था। (देखो अवध गजे० तवारीख लखनऊ)। ये सूर्य के भी बड़े उपासक थे, लिखा है—

Tilok Chand is said to have been a worshipper of the sun. Near Bahraich is a temple in his honour called Bala-ark.

(G. P. O. pp. 354)

'तिलोक चंद सूर्य के उपासक थे जिनकी यादगार

में बहराइच के समीप एक मंदिर बना हुआ है जो बाला-अर्क कहलाता है'।

अकौना नगर इन से सैकड़ों वर्ष पहले आबाद हो चुका था जो केवल इस वंश की याद में इनके निकास स्थान के समीप ही बसाया गया था, यही अर्कौना से बिगड़ कर अर्खौना और अर्खौना से बिगड़ कर अब अकौना कहलाता है। इसके आस पास इनके बजुर्गों के बसाये हुये अनेक नगरों के निशानात अभी तक पाये जाते हैं। हम ऊपर बतला चुके हैं कि 'उत्तर-कौशल' देश ही इस जाति का निकास-स्थान है कारण कि इनके आदि पुरुष ने यहीं जन्म लिया था और इसी अकौना नगर का ज़िकर करते हुये बहराइच गज़ेटियर लिखता है—

The history of this pargana is intimately connected with the Buddhist kingdom of Sravasti, which is generally identified with the great ruins at Sahet Mahet in Gonda a few miles distant from Ikauna. (194)

'इस परगने का इतिहास बौद्ध राजधानी श्रावस्ती से नज़दीकी सम्बन्ध रखता है जो आम तौर पर गोंडा में अकौना से कुछ मील फ़ासले पर सेहत महत की बड़ी तबाहियों को संकेत करता है।

एकबना (अखौना) से छै मील दूर राप्ती नदी के दक्षिण किनारे पर सेहत महत में श्रावस्ती की तबाहियों का बड़ा बिटोर है। सेहत महत पूर्व समय में श्रावस्ती के नाम से प्रसिद्ध एक नगर था। श्रावस्ती श्री रामचन्द्र के पुत्र लव की राजधानी थी। लव के वंश के राजा लोग श्रावस्ती में अथवा कपिलवस्तु में हुकूमत करते रहे। बाल्मीकी रामायण—उत्तर-कांड के १२०वें सर्ग में है कि श्री रामचन्द्र ने अपने पुत्र कुश को कौशल देशों का राज्य और लव को उत्तर भाग के देशों का राज्य दे दिया। और १२१वें सर्ग में है कि कुश के लिये कुशावती और लव के लिये श्रावस्ती नगरी बसाई गई।

इन तमाम प्रमाणों पर दृष्टि डालने से यही सिद्ध होता है कि वास्तव में यह अर्क जाति एक बिल्कुल शुद्ध मुख्य क्षत्रिय जाति है। जो अन्य वंशज समुदाय इसमें आकर मिल गये हैं या वह लोग जो इस जाति से निकल कर दूसरे वंशों में शामिल हो गये पर मानते इसी जाति को रहे, उन्हीं के विषय में ये गड़बड़ झाला लिखा मिलता है।

---

* अर्कवंशी राजपूतों के भेद *

जिस प्रकार अन्य जातियों में बहुत सी खांपें, भेद व उपभेद पाये जाते हैं, उसी प्रकार इस जाति में भी कई भेद हैं। इनके भेदों पर भी दृष्टि डालने से पता चलता है कि वास्तव में इनमें सोलह आने क्षत्रित्व भरा हुआ है क्योंकि अधिकतर इनके भेद भी क्षत्रिय वंशज हैं।

भेद— यह अर्क जाति सात भेदों में विभक्त है जिनमें पहला भेद अरख है।

अरख– (१) जिन अर्कवंशियों को विपत्तिवश प्राण रक्षार्थ इधर उधर भागना पड़ा वे लोग कृषि आदि धन्दे में लग गये वे लोग ही अर्क से अरक अथवा अरख कहलाये।

(२) जिन लोगों ने अरहर के खेत में छिप कर निज रक्षा की वह 'अरक या अरख' कहलाये।

(देखो मँडल सीरीज पहली पेज २८५)

इस जाति के अन्य भेद इस प्रकार से हैं—

खागर, खिदमतिया, चोबदार, अदरीज, गोड़ और बाछल।

इन भेदों को संक्षेप रूप में नीचे वर्णन करते हैं—

दूसरा भेद खागर व खाँगर है— (देखो Census Report of India, 1911, Vol. XV by E. A. H Blunt I. C. S. pp. 355) मि० ब्लन्ट साहब ने उपरोक्त सरकारी रिपोर्ट में लिखा है— There is a sub-caste of Arakh called Khagar (or Khangar), 'अर्खों की एक उप-जाति है जो खागर या खाँगर कहलाती है'। इन लोगों की गणना बुन्देलखंड प्रान्त में शुद्ध क्षत्रिय वंशों में है। (देखो श्री एटकिंसन साहब का रचा हुआ बुन्देल० गजे०)। देश काल की स्थिति और बदलाव के साथ २ इस जाति के नाम भी बदल गये हैं अर्थात् कहीं ये लोग खेंगार, खंगार, खेंगर, रामखेंगर, खाँगर खांगढ़, खांगर व खाँगढ़ कहे जाते हैं।

(क्ष० व० प्र० पृ० ७८०)

नामोत्पत्ती—

किसी समय में एक खेंगर राजा ने एक बार भक्ति के आवेश में आकर अपने सिर को अपने हाथ से काट कर अपनी इष्ट देवी पर चढ़ा दिया। उसका ऐसा साहस देख कर देवी बड़ी प्रसन्न हुई और देवी ने आज्ञा दी कि इसे खंगार डाल (अर्थात् धो डाल) इसी कारण से ये लोग खेंगार कहलाते २ 'खंगार' कहाने

लग गये। वर्तमान काल में श्री० काठियावाड़ नरेश भी इसी जाति के हैं। उनके गोत्रादि इनसे बिलकुल मिलते हैं। पृथ्वीराज के संकट के समय में कई बार इस जाति के राजाओं ने अपनी असीम वीरता का परिचय दिया था। पृथ्वीराज के समय में इस जाति के राजा बुन्देलखँड का राज्य करते थे। (क्ष० वं० प्र० पृष्ठ ७८६)

बुन्देलखंड के पश्चिमी हिस्से में चंदेले राजपूत लोग खांगर या कांगर लोगों से हारते चले आते थे। चंदेले लोग कभी खाँगर जाति के राजाओं के नौकर भी थे। खाँगर राजा ने एक किला "कराड़" नाम का बनाया था। जो ओरछा राज्य में झांसी से २० मील की दूरी पर बसाया था। उसे ही इन लोगों ने अपनी राजधानी बनाई थी। चौदवीं सदी तक इन लोगों ने राज्य किया। और बाद में ये किला इन लोगों से छीन लिया गया।

(क्ष० वं० प्र० भा० २ पेज ७८१)

अर्क जाति का तीसरा भेद खिदमतिया है। इनका यह नाम इस लिये पड़ा मालूम होता है कि इनके किसी सरदार का नाम खिदमतराव था। एक स्थान पर लिखा भी है—

These Khidmatiyas are said to have taken

their name from their chief, Khidmat Rao.

'ऐसा कहा जाता है कि खिदमतिया लोगों का निकास उनके सरदार खिदमतराव से है'। ये लोग—

According to the Ain-i-Akbari a thousand men of the tribe guarded the environs of the palace of Akbar. *(Eth. Hand: pp. 168)*

'आइने-अकबरी के लेखानुसार इनके हज़ारों मनुष्य अकबर के राज महल के संरक्षक का काम करते थे' आगे लिखा है कि 'उनका कहना है कि उन्नाव ज़िले में अकबर ने उन्हें चित्तौड़ पर आक्रमण करने की सेवा रूप में जागीरें दी थीं।

ये लोग ज़िले बुलन्दशहर के परगने बारन के तीन गाँवों में भी अधिकतर आबाद हैं।

चौथा भेद 'चोबदार' है— यह भी क्षत्रिय वँशज है, जिसके अर्थ भोजन जिमाने वाले के है अर्थात् जिन लोगों ने रसोइये का काम किया वे चोबदार कहलाये। मि० क्रूक साहब ने लिखा है— Chobdar means "mace bearer" 'चोबदार के अर्थ भोजन जिमाने वाला।'

पाँचवा भेद 'अदरीज' है— ये लोग ब्राह्मण वंशज हैं जो किसी समय इस जाति में मिल गये। मि० क्रूक साहब ने लिखा है—

(Adhrij— Which is highest of all, claiming descent from a Brahman.)

'अधरीज— जो सब से ऊंचे हैं और अपना निकास ब्राह्मणों से बतलाते हैं।'

श्री एटकिंसन साहब लिखते हैं—

The Adhrij, who derive their origin from inter-marriage with a Brahman are the highest in estimation.

'अदरीज— जो कि ब्राह्मण जाति के साथ शादी व्योहार करने से अपना निकास बतलाते है, जाति पद में सब से ऊंचे हैं।

छटा भेद गौड़ है— गौड़ राजपूतों का एक प्रसिद्ध भेद है, इसकी गणना राजपूतों के ३६ कुलों में है (देखो फुटकर नोट पेज ५) परन्तु मि० क्रूक के कथनानुसार मालूम होता है कि गौड़ या गौर का सम्बन्ध अहीर जाति से है क्योंकि उन्हों ने अपने ग्रन्थ में लिखा है—

Guar connects them with the Guala Ahirs

'गौरों का सम्बन्ध ग्वाल अहीरों से है'। इस से सिद्ध होता है कि किसी समय यह लोग भी इन में सम्मिलित हो गये।'

सातवाँ भेद बाछल है— इसकी गणना भी राजपूतों के भेदों में है।

नामोत्पत्ती— अ० ग० जिल्द दूसरी पेज ३५५ लिखता है कि जब राजवंशी अर्कों की शक्ती कम हुई तब जिन लोगों ने बाग द्वारा निज रक्षा की वे बाछल कहलाये।

Others took to the trees *(baghs)* and were ever afterwards called Bachals. *(O. G. 355)*

'दूसरों ने दरख़्तों (बागों) की आड़ ली और इसके बाद हमेशा बाछल कहलाये।'

---

* वर्तमान स्थति और बसावत *

वर्तमान समय इस जाति की स्थति बहुत अच्छी है। पढ़े लिखे लोग सरकारी मुलाज़मत, देशी (private) नोकरियाँ, व निजी व्योपार (Business) आदि २ तथा ग़रीब लोग साधारण मज़दूरी तथा धनवान लोग

अच्छे २ रोज़गार और जाति के अधिकतर देहाती लोग कृषी आदि २ कर्म करते हैं। इस जाति के व्यवसाय (पेशे) आदि का वर्णन सरकारी रिपोर्ट में इस प्रकार मिलता है—

Cultivators, agricultural and general labourers. Cattle and sheep breeders, herdsmen, etc. Artisans, Transport, Trade, Public force and administration, Arts and professions, Domestic service.

(C. R. of India 1931 Page 438)

अर्थात् ये लोग— 'किसान, खेती सम्बन्धी और साधारण मज़दूर, भेड़ बकरी और गाय आदि पालने वाले, शिल्पकार, व्यौपारी, राज्य सिपाही और राज्य सचालक, कारीगर और घरेलू चाकरी' आदि आदि धन्धे करते हैं। इस जाति की लोक सँख्या सन् १९३१ की मनुष्य गणना में ८५, ९०७ है। बुन्देलखंड और अवध प्रान्त में ये ज़्यादा हैं और मेरठ, अम्बाला, देहली आदि २ शहरों में भी थोड़े बहुत पाये जाते हैं।'

इनकी बसावत के विषय में मिस्टर क्रूक साहब ने इस प्रकार लिखा है—

They are found in every district of the Allahabad division except Jaunpore; Benares except Mirzapur and Ballia; Lucknow except Bara Banki;

and Rae Bareli except Sultanpur; also in Herdoi, Gonda, Meerut, Cawnpore, Farukhabad, Etah, Shahjahanpur and Pilibhit districts.

(Eth. Hand Book Page 5)

'ये लोग इलाहाबाद डिवीज़न के हर एक ज़िले में जौनपुर को छोड़ कर, बनारस में मिर्ज़ापुर और बलिया छोड़ कर, लखनऊ में बाराबंकी और रायबरेली में सुलतानपुर को छोड़ कर मिलते हैं। हरदोई, गोंडा, मेरठ, कानपुर, फर्रुखाबाद, ऐटा, शाहजहाँपुर, और पीलीभीत के ज़िलों में भी पाये जाते हैं'। मि० नेवल साहब लिखते हैं—

They are chiefly found in the Sandila Tahsil, while there are considerable numbers in the parts of Bilgram. The Arakhs are far more common in Hardoi than in any other district of the United Provinces. *(H. G. Page 63)*

'ये सँडीला तहसील में विशेषतया पाये जाते हैं और बिलग्राम में इनकी पर्याप्त संख्या है। युक्त प्रदेश के और ज़िलों की अपेक्षा अरक लोग हरदोई ज़िले में बहुत मिलते हैं।' ये लोग फतेहपुर, बांदा, बस्ती, खेड़ी और प्रतापगढ़ आदि ज़िलों में विशेष है। हमीरपुर गज़ेटियर से पता चलता है कि वहाँ इस जाति की

आबादी १८९०९ है जो लगभग सारे ही कृषिक हैं। और बाँदा गज़ेटियर बतलाता है कि और जातियों की बनिस्बत अर्क और लोधी लोगों की यहाँ अधिक बसावत है। ये लोग बुन्देलखंड प्रान्त के निम्न लिखित स्थानों में विशेष हैं—

औगासी, बाँदा, छीबुन, दरसेंदा, हमीरपुर, मौधा, पैलानी, सुमेरपुर, तराहवान।

---

* गोत्र *

इनका कश्यप गोत्र है। लिखा है कि केवल द्विजों के गोत्र होते हैं और जिनके गोत्र होते हैं उनके ये ८ बातें भी होती हैं यथा— गोत्र, प्रवर, शाषा, शिखा, सूत्र, वेद, उपवेद, और देवता। अतः कश्यप गोत्र का वेद सामवेद, उपवेद, गन्धर्व वेद, प्रवर कश्यप, असति और दवल, शाखा कौथमी, सूत्र गोभिल, शिखा वाम, और देवता विष्णु जानने चाहियें।

(जा॰ अ॰ पृ॰ १६२, १७६)

गोत्र के विषय में एक विद्वान की राय जिन्हों ने इस प्रकार लिखा है कि—

'महाभारत आदि इतिहास ग्रन्थों से मालूम हुआ है कि आप का गोत्र कश्यप है क्योंकि श्रुति कहती है कि-

गोत्रा भावेतु काश्यपम्

इस से कश्यप गोत्र उच्चारण करना चाहिये'* इसके अतिरिक्त कश्यप ऋषि हमारे कुल में थे जिस कर कश्यप ही गोत्र हुआ। इनकी इष्ट देवी आदिशक्ति दुर्गा है जिसकी पूजा अथवा हवन विजय दशमी को होता है।

इस जाति के पूर्वज राजा शाक्य कश्यप गोत्रिय ही थे। एक स्थान पर लिखा है—

While at Tandwa village, also in the Ikauna ilaqua, still exists a mound which is probably identical with that raised over the ralics of the body of Kasyapa Budha. *(G. P. O. pp. 202)*

'जब कि अकौना इलाक़ा के मौज़ा ताँदवा में अभी तक एक टीला वर्तमान है जो सम्भव है कि कश्यप गोत्रिय बुध के मृतक शरीर के ऊपर उसकी यादगार में ही बना है'। बुध का नाम ही राजा शाक्य था। (देखो अ० वं० क्ष० वंशा० पेज २२)।

---

* पं० मुकन्द लाल जी, शर्म्मा, अम्बाला।

* सती *

प्राचीन प्रथा के अनुसार अर्कवंशी देवियां सती हुआ करती थीं जिनके स्मारक चिन्ह (सती चौरे) जहाँ तहां बने हुये अभी तक विद्यमान (मौजूद) हैं। बिलग्राम के मौहल्ले रफ़य्यतगंज की पूर्वी दिशा में इसी वंश की देवी का सती चौरा बना हुआ है, कहा जाता है कि बिलग्राम के आस पास बहुत सी देवियाँ सती हुई थीं। इनके नाम व निशान का पता बहुत मालूम करने पर भी नहीं लगता क्योंकि इस ज़माने में जब इस जाति का पतन हुआ, अपना धर्म और मान बचाना ही बहुत मुश्किल था। ऐसे विकट समय में सतियों के स्मारक चिन्ह कौन बनवाता। कुछ लोगों ने ऐसा उद्योग किया भी जिसके फल स्वरूप कुछ निशानात अभी तक कहीं २ पर मौजूद हैं। माताओ! इन देवियों से शिक्षा लो और अपने पुत्र तथा पुत्रियों को जाति के सच्चे मार्ग पर चलाने का उद्योग करो, जिस से तुम्हारी कोख उज्ज्वल हो—

* भजन *

प्यारी बहिनों ये हुई है, क्या दशा इस जाति की।
अब भी तुम कुछ भी न सोचो, है शरम इस बात की॥
पुत्र को और पुत्रियों को, दो उचित शिक्षा सभी।
जिस से हो जग में बड़ाई, पिता की और मात की॥
प्यारी बहिनों ॥१॥

हो रहा चारों तरफ़, कैसा उजाला आज कल।
आँख खोलो अब ज़रा, देखो दशा संसार की ॥
प्यारी बहिनों ॥२॥
जागो बहिनों, जागो बहिनों, विद्या पढ़ो, विद्या पढ़ो।
जिस से तुम्हें कुछ ज्ञान होवे, अपने कर्मों धर्म की ॥
प्यारी बहिनों ॥३॥
जाति का होगा भला, इस तौर से 'सुरजावती'।
मिलके सब उन्नति करो, जै बोलो आरक वंश की ॥
प्यारी बहिनों ॥४॥

---

* भजन *

बेड़ा जाति का पार लगाते चलो।
यही उपदेश प्यारो सुनाते चलो ॥
कौन थे क्या होगये, कुछ भी न इस का ख़्याल है।
अब भी तुम कुछ भी न समझो, क्या हुआ ये हाल है ॥
खोटी रसमों को यारो हटाते चलो ॥
बेड़ा जाति का पार लगाते चलो ॥१॥
हैं कहां त्रिलोकचंद से, वीर योधा अब यहां।
भीमदेवी और गोविंदचंद से दानी यहां ॥
देवें उपदेश तुमको 'निभाते चलो' ॥
बेड़ा जाति का पार लगाते चलो ॥२॥

फूट से अब तो हमारा, हाल अबतर हो गया।
मूर्खता बे समझी से ही, ख्याल कमतर हो गया॥
मिटती जाति को आज बचाते चलो॥
बेड़ा जाति का पार लगाते चलो॥३॥
ऐ 'किशनसिंह' ये ज़माना उन्नति करने का है।
जाग कर देखो, नहीं ये वक्त अब सोने का है॥
जाति भक्ति को यारो दिखाते चलो॥
बेड़ा जाति का पार लगाते चलो॥४॥

नाथ अनाथ के मेरे स्वामी हैं, दर्शन कब हमें देवेंगे, प्रभु।
वेद शास्त्र में तुम्हें गावत हैं, इस जाति को आप जगावेंगे, प्रभु।
हृदय से मैंने ध्यान धरो है, डूबी नाव तरावेंगे, प्रभु।
युगन युगन के तारे छिपे हैं, इनको अब चमकावेंगे, प्रभु।
कृष्ण ने कर पर गिरवर धरो है, सब मिल हाथ लगावेंगे, प्रभु।
'नन्हेसिंह' की आस यही है, धीरज आप धरावेंगे, प्रभु।

मेरी सुधि लेना भगवान, गोतम नार तारने वाले।
मुझको लिया बनी में घेर, तुमने कहाँ लगाई देर,
क्यों नहीं दुष्टों को किया ज़ेर, द्रोपदी चीर बढ़ाने वाले।
मेरी सुधि॥ १॥

घेरा हरनाकुश प्रहलाद, तुमने किया खंभ में वास,
मारा दुष्टों को ततकाल, भक्त के काज बनाने वाले।
मेरी सुधि ॥ २ ॥

गज को लिया ग्राह ने घेर, भक्त ने कीनी हर से टेर,
प्रभु तुम ज़रा करी ना देर, गज के फन्द छुड़ाने वाले।
मेरी सुधि ॥ ३ ॥

हो गये सली मली दो बीर, करते राज बड़ा गम्भीर,
बंधाते थे प्रजा की धीर, क्षत्री सुःख दिखाने वाले।
मेरी सुधि ॥ ४ ॥

कहते मूलचंद सुरज्ञानी, तोतेसिंह हुये अगवानी,
नन्हेसिंह मेरठ का सैलानी, 'देवीसिंह' छँद बनाने वाले।
मेरी सुधि ॥ ५ ॥

बैठा था मैं रंज फ़िकर में, हर से प्रीत लगाई थी।
ध्यान गया जब पूरब में, कुछ ख़बर वहाँ नहीं पाई थी ॥
खोज किया जब दखिलन में उत्तर की सुरत लगाई थी।
पश्चिम में जब ख़बर मिली, पंचों से अरज़ लगाई थी ॥
अम्बाला और देहली, कोयटा, कनवज ख़बर पहुंचाई थी।
बांगर मऊ ज़िला हरदोई, मलीहाबाद सुनाई थी ॥
इन देशों में पत्र भेज, भय्यों से सभा कराई थी।
किशन, किशोरी, मूलचंद, 'नन्हे' ने टेर लगाई थी ॥

कारण कारज जाति के, देहु बुद्धि और ज्ञान।
बहुत विकल अब हैं प्रभु, जान न पावे मान॥

हरे प्रभु तुम ही हो करतार।
अर्क जाति विनतीं करे स्वामी, सुधि लो निर्वाकार। हरे।
तुम ही हो भगवान जगत के, कर दो बेड़ा पार। हरे।
जितने तारे छिपे हुये हैं, चमकादो एक बार। हरे।
हरियाये सूखी फुलवाड़ी, चमन होय गुलज़ार। हरे।
सुरजावती शरण है तेरी, विनती यही है हर बार। हरे।

प्रभु दीन बन्धु भगवान हरी,
मेरी जाति का बेग सुधार करो।
मोरी नाव भँवर में अटक रही,
मँझधार से इसको पार करो। १
तुम दीनानाथ कहावत हो,
दीनन के दुःख दुरावत हो,
केहि कारण देर लगावत हो,
कर दया मेरा निस्तार करो। २
दुरबुद्धी दुरावो हृदय से हरी,
उर ज्ञान का दीपक बाल धरो,
कर दूर तिमर उजियार करो,
सब दूर हृदय का विकार करो। ३

मोरे हृदय की जानन हार प्रभु,
जनके सब कारज सार प्रभु,
बर माँगत हाथ पसार प्रभु,
अब तो हमरो उपकार करो। ४
अब नाथ मनोरथ सिद्ध करो,
अपराध हमारो हृदय न धरो,
कहे देबीसिंह (२) मौकु पार करो,
अब तो हमरो निर्वार करो। ५

---

* एकादश नियम *

प्रत्येक जाति भाई के लिये इन 'ग्यारा नियमों' पर चलना उनका मुख्य धर्म है। इनके यथार्थ प्रयोग से जाति का अवश्य कल्याण होगा—

(१) स्वयं विद्या पढ़ो और अपनी संतान को पढ़ाओ।
(२) नित्य प्रति ठण्डे जल से स्नान करना चाहिये जिस से बुद्धि तथा शरीर दोनों निर्मल होते हैं।
(३) सदा आचार विचार से रहो।
(४) दुनिया भर के पाखँड छोड़ केवल परमात्मा की उपासना करो जिनके प्रसन्न होने से जगत में क्या दुर्लभ है!

(५) गऊ और ब्राह्मण की रक्षा तथा सेवा करो।

(६) किसी के चित्त को मत दुखाओ, समझो कि यह बड़ा पाप है।

(७) अपनी जाति को श्रेष्ट समझो।

(८) विद्वान जनों का आदर करो।

(९) भगवान की सृष्टि तथा उसकी लीला दर्शन के लिये देश भ्रमण करो और जहाँ जाओ जाति को सद्उपदेश दो।

(१०) सत्य बोलो जिस से तुम्हारी आत्मा और इंद्रियां बलवान तथा उद्योगी हों।

(११) ब्रह्मचर्य से रहो।

* नौजवानों उठो *

जिस को न निज गौरव तथा निज जाति का अभिमान है।
वह नर नहीं नरपशु निरा है और मृतक समान है॥

जाति से प्रेम करने वालो! देश हितैषियो! आर्यावर्त के नवयुवको! उठो! आज सम्पूर्ण जाति तुम्हारी ओर टकटकी लगाये हुये है। जिस प्रकार ग्रीष्म ऋतु में प्रत्येक मनुष्य तथा पशु बादलों को देख कर आशा करते हैं कि अब यह बरस कर हमारी तपन को बुझायेंगे,

खेत हरे होंगे तथा हमारे सम्पूर्ण परिश्रम सुफल करेंगे, उसी प्रकार आप की समस्त जाति आप की ओर दृष्टि रखती हुई आप से आशा करती है कि आप जाति का दुख दूर करते हुये जाति उन्नति करेंगे। आप नवयुवक हैं, समझदार हैं और जाति की आवश्यकताओं से भली भाँति परिचित हैं, आप लोग यह भी जानते हैं कि जाति में किस बात की कमी है, हमें क्या करना चाहिये, हम पहले क्या थे और अब क्या हो गये, ऐसी जाति की गिरी हुई दशा देख कर यदि आप जाति की सहायता न कर सकेंगे तो मेघों के न बरसने पर जो निराशा छा जाती है ठीक वही दशा आपकी जाति की होगी। क्या आप यह मन्जूर करेंगे कि जिस जाति में आपने जन्म लिया, जिस जाति के रुधिर से आपका सुन्दर शरीर बना है, जिस जाति ने आपको हर प्रकार की सहायता दी है और जिसकी बुराई से आपकी बुराई तथा जिसकी भलाई से आपकी भलाई है, उसको क्या आप नष्ट होती हुई देखेंगे या आप उसका अपमान हुआ देखेंगे और फिर उसके सुधार करने का उपाय न सोचेंगे? नहीं, नहीं! आप लोगों से ऐसी आशा हमें कदापि नहीं हो सकती आपके अंग २ में आपकी जाति का पवित्र खून भरा हुआ है, आप कभी इसका अपमान सहन

नहीं कर सकते, अपने पूर्वजों की ओर देखो उनके इतिहास पढ़ो, जिन्हों ने अपने बल व पराक्रम से दूर २ तक राज्य स्थापित कर रक्खा था, अपने देश की माताओं को देखो जिन्हों ने अनेक संकट के समय देश को सहायता दी और दे रही हैं, क्या आप पुरुष होकर भी इनके पीछे ही रहेंगे ? कभी नहीं ! हमारी बुद्धी इस निर्बलता को देख कर चकित रह जाती है कि इतने नवयुवक होते हुये भी यह जाति इतनी हीन दशा को प्राप्त है। आप क्या नहीं कर सकते ? ऐसा सुन्दर समय होते हुये यदि आप ही कुछ नहीं करें तो इसमें किसी का क्या दोष, मैं समझता हूँ कि जाति सेवा हर समय अनेक संकट सहने पर भी करनी चाहिये। सोना जितना तपाया जायगा उतना ही कञ्चन निकलेगा। हमें शोक के साथ कहना पड़ता है कि आपकी जाति इस प्रकार कष्ट सहते हुये अपने दिन व्यतीत करे और हमारे नौजवान भाई टस से मस न करें। हम आप से यह पूछते हैं कि आप में किस बात की कमी है, खासे दो हाथ और दो पैर जो संसार में हर एक के हैं सो आपके भी हैं, जैसे और मनुष्य अपनी जीवकार्थ कुछ न कुछ करते रहते हैं वैसे ही आप भी खेती, बारी, नौकरी इत्यादि पेशे करते हैं जिस तरीके से कोई किसी का मोहताज नहीं वैसे ही आप भी किसी के मोहताज

नहीं, जैसे और मनुष्य अपने शरीर में ताक़त रखते हैं वैसे ही आपके शरीर में भी बल है। रहा मामला लक्ष्मी का सो यह बात ज़रूर है कि हमारी जाति में धन का ज़्यादा अभाव है, यह कोई बड़ी बात नहीं। ईश्वर पर भरोसा रखते हुये सच्चे मन से मेहनत करो, उद्योग करो, रोज़गार करो, खेती बारी करो, भगवान आपको सब कुछ उसी में देगा, मेहनती तथा उद्योगी मनुष्य के सामने लक्ष्मी हाथ जोड़े खड़ी रहती है। ग्रामों में स्कूल सरकारी खुले हुये हैं आप लोग अपने बच्चों को उनमें पढ़ने के लिये भेजें, अगर आप खुद पढ़े लिखे नहीं हैं तो पढ़ने की कोशिश करें, जो बुरा काम आपको दिखाई दे उसको छोड़ें, अच्छे कार्यों के करने से भले आदमी खुश होते हैं और बुरे कार्य करने से दुनिया नफ़रत करती है। इस लिये ऐ भाइयों यदि आप लोगों की रगों में आपकी जाति का पवित्र खून भरा हुआ है तो आप अपनी दशा संभालो और जाति की डूबती हुई नय्या को पार लगाओ। इसी में आपकी भलाई है नहीं तो वह ज़माना आने वाला है जब आप ऐसे अमूल्य समय के लिये रोवेंगे और कहेंगे कि हाय हम कुछ न कर सके, वही मसल याद आवेगी कि—

अब पछताये का होत है जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत।

इस लिये भाइयो अब उठो ! जाति को सम्भालो ! [illegible] को हाथ से न जाने दो, ऐ गाढ़ी निद्रा में सोने [illegible]ो आलस्य में वक्त न खोओ, जो जातियाँ आपके [illegible]छे थीं वह आप से बहुत आगे निकल गईं और आप [illegible]बेखबर सोते रहे। यद्यपि तुम्हारी शक्ती निर्बल है, [illegible]गठन नहीं है इस कारण नाश हो रहा है, परन्तु प्यारे [illegible]ाइयो साहस में वह शक्ती है कि अकेले श्री रामचन्द्र [illegible]ी को बनबास की आज्ञा हुई थी उन्हों ने साहस, बुद्धि [illegible]ौर संगठन के प्रताप से महाबली दसशीश रावण [illegible]ो मार गिराया। ऐसे ही अनेकों दृष्टान्त मौजूद हैं [illegible]स में अनेकों बार मनुष्य ने बड़े से बड़े काम को बहुत [illegible]आसानी से कर दिखाया। स्वामी दयानन्द जी को [illegible]देखिये कि एक अकेली ताक़त ने समस्त भारतवर्ष को हिला दिया। ईसामसीह को देखिये ! करोड़ों मनुष्य उनके अनुयायी हुये, हज़रत मोहम्मद साहेब को देखो, [illegible]लाखों मुसलमान उनकी उम्मत हुये। भाइयो ! आप लोग तो क़रीब एक लाख के हैं और फिर अपनी ही उन्नति करना है, कोई बड़ा काम आप के लिये नहीं है अगर इस में भी फेल हो गये तो समझो कि दुनिया में फिर कोई ठिकाना नहीं। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि भगवान आप लोगों को सद्बुद्धी और साहस प्रदान [illegible]रे जिससे आप जाति उन्नति कर सकें।

हम परोपकारी श्री मदनपाल सिंह जी Inspector Police, Mallawan अथवा उदार हृदय श्री कुंवरपाल जी, (पलिया) व पं० रामचन्द्र जी शर्मा बेला प्रताप आदि २ महानुभावों के बड़े आभारी हैं जो अनेक प्रकार से जाति के सहायक हैं। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि इन महापुरुषों को हमेशा सुःख और शान्ति प्रदान करें—

प्राप्य है आदर तभी इस लोक में,
दूसरों का हित अगर करता रहे।
दान देकर लोक हित सर्वस्व को,
दुःख दीनों का सदा हरता रहे।

'रत्न'

हम बाबा शँकरदास, धनीदास, भवानीदास किसनदास, अन्तूदास, रम्मादास, माधोदास, गोकुलदास, गिरवरदास, धीरनदास, लालदास, मेढ़ईदास, पीतमदास आदि २ त्यागी पुरुषों से प्रार्थना करते हैं कि आप लोग देश भ्रमण करें और जहां पधारें वहीं जाति को सद्दुउपदेश देवें। हमें पूरी आशा थी कि जाति का पूरा २ इतिहास दूसरे भाग में समाप्त हो जावेगा परन्तु अति संक्षेप में लिखने पर भी बहुत सा मज़मून शेष रहा इस कारण इनका अधिक से अधिक इतिहास बँशावली के तीसरे भाग में लिखेंगे।

विनीति प्रार्थी:—
सेवक मूलचन्दसिंह, अर्क।